ISSN 2349-6614

जनवरी 2021

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

अन्नदाता में आक्रोश

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 18 अंक 9 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

जनवरी
2021
वर्ष 18, अंक 9

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर,आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली,सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

वीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - साहिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

2021

नववर्ष सबके लिए शुभ और मंगलमय हो हार्दिक शुभकामनाएं

अन्दर के पृष्ठों पर...

चुनाव
पंचायत में भाजपा तो निकाय में कांग्रेस भारी
10

विदेश

जो बिडेन होंगे अमेरिका के नए राष्ट्रपति
36

विरासत

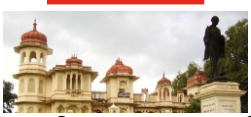

पर्यावरण के संदर्भ में 'सज्जन निवास बाग'
40

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनियर प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

ॐ
Purohit Cafe
A South Indian Food Joint
N. K. Purohit
आपका विश्वास ही हमारी पहचान
वर्ष 1970 से 1980 तक दुबई में तथा 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में सफल सेवाओं के बाद अब 1987 से उदयपुर शहर में
(तीन दशक से आपके विश्वास पर खरा सिद्ध)
❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार और लाजवाब पसंद, शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था।
❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।
"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

टीकाकरण और चुनौतियां

दुनिया के कई देशों के साथ ही भारत में भी कोविड-19 के खिलाफ बड़े स्तर पर टीकाकरण की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। हालांकि भारत के पास टीकाकरण का एक बड़ा लम्बा अनुभव है, फिर भी कई बड़ी चुनौतियां सामने हैं।

भारत जैसे विशाल देश में टीकाकरण सामान्य बात नहीं है, हालांकि भारत के पास पोलियो उन्मूलन तथा पूरे देश में वोटिंग कराने के लम्बे अनुभव के कारण मजबूत बुनियादी ढांचा है। बावजूद इसके विभिन्न हिस्सों में कोल्ड चेन क्षमता का विस्तार करना उसकी प्रमुख चुनौती होगी। विशेष रूप से देश के उन घनी आबादी वाले हिस्सों, शीत प्रभावित क्षेत्र में जहां इस तरह के बुनियादी ढांचे की सुविधाएं सीमित हैं। अन्तराल और उपभोक्ता के गंतव्य स्थान पर आवागमन की समस्या के बारे में भी विचार करने की जरूरत है, क्योंकि भारत के सुदूर पहाड़ी इलाकों में आवागमन की सुविधाएं बेहतर स्थिति में नहीं हैं, लिहाजा वहां पर सुविधाएं किस माध्यम से पहुंचेगी यह भी विचारणीय है।

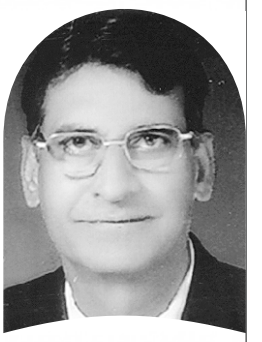

सरकार ने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि प्रत्येक नागरिक को टीका लगाया जाएगा अथवा नहीं, लेकिन तीन स्तर पर टीकाकरण की घोषणा तो कर दी है। पहले स्तर पर मेडिकल और पैरामेडिकल स्टाफ को, दूसरे स्तर पर पुलिसकर्मी और अन्य आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों को तथा तीसरे स्तर पर 50 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों का टीकाकरण किया जाएगा।

अभियान के दौरान टीकाकरण के दस्तावेजीकरण, सुरक्षित टीकाकरण की निगरानी एवं ट्रेकिंग महत्वपूर्ण होगी। जो कि परम्परागत रूप से देश में बहुत अच्छी तरह से नहीं होती आई है। इसके लिए निगरानी या समर्थन तंत्र को और अधिक बेहतर बनाने की जरूरत होगी, ताकि इससे होने वाले दुष्प्रभावों पर अच्छी तरह नज़र रखी जा सके।

टीकाकरण के प्रबन्धन में वैश्विक मानकों को ध्यान में रखना भी बड़ी चुनौती होगी। प्रबन्धनकर्त्ताओं को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ द्वारा 2018 में टीकाकरण प्रबन्धन पर 89 देशों के सर्वेक्षण में भारत 51 से 75 प्रतिशत के दायरे में रहा था। टीका, सीरिंज आदि की मांग का आकलन, टीका आपूर्ति प्रक्रियाओं का पालन और एमआईएस प्रक्रिया में देश का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। अतएव देश में टीकाकरण के लिए मजबूत बुनियादी ढांचे बेहद आवश्यक हैं।

कोरोना से जंग में ऐसी कई प्रकार की चुनौतियां है जो बाह्य तौर पर नज़र नहीं आती। अभी तो स्थिति यह है कि कौन-सा टीका अधिक कारगर होगा और कब आयेगा, तय नहीं हो पाया है। मेडिकल साइंस इस स्थिति को लेकर अभी भी उहापोह में है। जहां एक ओर अमेरिकन कम्पनी फाइजर के टीके को भारत के लिए अनुपयोगी बताया जा रहा है वहीं देश में बन रहे कोविशील्ड टीके को एम्स के निदेशक डॉ. रणदीप गलेरिया ने पूरी तरह सुरक्षित और कारगर बताया और कहा कि इसका कोई दुष्प्रभाव देखने को नहीं मिला है। दूसरी ओर अमरीकन कम्पनी मॉडर्ना ने भी किशोरों के लिए टीका बनाने का काम शुरू कर दिया है। टीका निर्माण की इस आपाधापी के बीच कई नकली दवाइयां भी बाजार में आ गई है जो लोगों को भ्रमित कर रही है। सरकार के सामने इन गैर-कानूनी कार्य करने वालों से निपटना भी बहुत बड़ी चुनौती होगी। ये तत्व सरकारी प्रणाली को चौपट कर सकते हैं। इसलिए इन तत्वों पर निगरानी और अंकुश लगाना जरूरी है।

यों तो सरकारी स्तर पर टीके के ट्रायल की बातें हो रही है। कई टीकों पर विवादास्पद बातें भी सामने आ रही है। अमरीकन कम्पनी फाइजर यह कहने की स्थिति में नहीं है कि टीके के बाद संक्रमण फैलेगा या नहीं। दूसरी ओर कोरोना टीके से सम्बन्धित सवाल पर विशेषज्ञों का कहना है कि कोई भी टीका किसी भी बीमारी से सौ फीसदी प्रतिरक्षा प्रदान नहीं कर सकता है। ब्रिटेन से 'स्टेन' वायरस की दस्तक ने भी एक नए भय को पैदा किया है। ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है कि सावधानी ही सुरक्षा है।

बहरहाल कुछ विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि यदि किसी व्यक्ति को टीका लगाने के बाद संक्रमण हो भी जाता है तो इसे टीके की विफलता नहीं माना जा सकता क्योंकि टीके की दो खुराक देने की आवश्यकता होती है। टीकाकरण के बाद रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में भी उपभोक्ताओं को जागरूक करना होगा। इस बात का ध्यान रखना होगा कि टीकाकरण की एक खुराक के बाद दूसरी खुराक से कोई वंचित न रहे।

कुल मिला कर टीकाकरण भारत जैसे विशाल देश के लिए चुनौती भरा कार्य है। कोविड टीका कोई जादू की गोली नहीं है जिसे खाते ही कोविड पूरी तरह खत्म हो जाएगा। लेकिन कोरोना के परीक्षणों के सकारात्मक परिणामों का मतलब है कि हम दुनिया से इस महामारी के अन्त की उम्मीद कर सकते हैं।

नए कृषि कानून

किसान व सरकार आमने-सामने

जगदीश सालवी

संसद में पारित तीन कृषि कानूनों के विरोध में पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश समेत आसपास के राज्यों के किसानों का दिल्ली की सीमा पर पिछले कई दिनों से विरोध प्रदर्शन जारी है।

किसानों संगठनों का आरोप है कि नए कानूनों के कारण भविष्य में एमएसपी एवं एपीएमसी मंडियों का अस्तित्व समाप्त होने के साथ कृषि क्षेत्र पूंजीपतियों के हाथों में चला जाएगा जिसका सीधा-सीधा नुकसान किसानों को होगा। किसानों की मांग है कि सरकार किसान विरोधी इन कानूनों को तुरन्त वापस लें। किसानों की आशंकाओं को समझते हुए सरकार इन कानूनों में संशोधन करने को तैयार है, लेकिन कानून को वापस लेने को तैयार नहीं है। सरकार की ओर से सात-आठ मुद्दों पर संशोधन की बात की गई थी और कहा गया था कि वह वर्तमान में लागू न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था को जारी रखने के लिए लिखित में आश्वासन देने को तैयार है।

किसान संघ के नेताओं ने प्रस्ताव को किसानों का अपमान करार दिया। किसानों के तेवर और किसान संगठनों की ओर से कानूनों के विरोध में 8 दिसम्बर को बुलाए गए भारत बंद के दौरान मिले अपार समर्थन को देखते हुए सरकार के अग्रिम पंक्ति के नेता किसानों से बातचीत कर इस मुद्दे को सुलझाने की कोशिश में लगे हुए हैं। विपक्षी पार्टियां शुरू से ही इन कानूनों के विरोध में खड़ी दिखाई दी हैं। पिछले दिनों प्रमुख विपक्षी नेताओं शरद पंवार, राहुल गांधी, डी. राजा, सीताराम येचुरी और टीकेएस इलांगोवन ने राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द से मुलाकात कर कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग की।

राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद एनसीपी प्रमुख शरद पंवार ने कहा कि राष्ट्रपति से अनुरोध किया गया कि ये कृषि कानून निरस्त किए जाने चाहिए, क्योंकि इन पर ना ही संसद की प्रवार समिति में चर्चा की गई और ना ही अन्य पक्षकारों के साथ विचार-विमर्श किया गया। ये सभी विधेयक जल्दबाजी में पारित किए गए। सरकार ने संसद में विपक्षी नेताओं द्वारा उठाए गए एक भी सुझाव को स्वीकार नहीं किया। नए कानूनों में एमएसपी का जिक्र नहीं है, इसलिए किसान परेशान हैं।

क्यों हो रहा है विरोध?

- किसान संगठनों का आरोप है कि नए कानून के कारण कृषि क्षेत्र पूंजीपतियों के हाथों में चला जाएगा जिसका नुकसान किसानों को होगा। क्योंकि सरकार अकाल, युद्ध, प्राकृतिक आपदा जैसे समय पर ही न्यूनतम मूल्य निर्धारित करेगी जैसे कोरोना काल में सेनेटाइजर मास्क पर लगाया था।
- कृषि उत्पाद की जमाखोरी के कारण वस्तुओं की कीमत बढ़ जाएगी।
- मंडी में किसानों के लिए न्यूनतम मूल्य निर्धारित होता है। जबकि नये कानून में यह स्पष्ट नहीं है। किसान को फसल का न्यूनतम मूल्य मिलेगा या नहीं।
- एपीएमसी में किसानो को फसल के मूल्य में किसी प्रकार की धोखाधड़ी होने का डर नहीं रहता। जबकि नए कानून के अनुसार पैन कार्ड वाला कोई भी व्यापारी फसल खरीद सकता है।
- किसान फसल को मंडी से बाहर बेचता हो तो एपीएमसी मंडिया समाप्त हो जाएगी।

सरकार ने बताई कानूनों की विशेषताएं

■ कानूनों में किसानो को देश में कहीं भी फसल बेचने को आजाद किया है। ताकि राज्यों के बीच कारोबार बढ़ेगा और किसानों को भी अच्छी कीमत मिल सकेगी।

■ सरकार ने कृषि हेतु एक राष्ट्रीय फ्रेमवर्क का प्रोविजन किया है जिसके अन्तर्गत पैदावारों की बिक्री, फार्म सर्विसेज, कृषि बिजनेस, फर्मों, प्रोसेसर्स, थोक विक्रताओं, बड़े खुदरा विक्रेताओं और एक्सपोर्टर्स के साथ किसानों को जुड़ने के लिए मजबूत करता है। जिससे बिचौलियों का लाभ समाप्त होगा। कॉन्ट्रेक्टेड किसानों को क्वालिटी वाले बीज की सप्लाई तय करना, तकनीकी मदद और फसल की निगरानी तथा कर्ज एवं फसल बीमा की सहूलियत मुहैया कराई गई है।

■ बिलों में अनाज, दाल, तिलहन, खाने वाला तेल, आलू-प्याज को जरूरी चीजों की सूची से हटाने का प्रावधान है। जिससे किसानों को अच्छी कीमत मिल सके।

■ किसानों को ई-ट्रेडिंग मंच प्रदान किया जाएगा। जिसके माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक निर्बाध व्यापार सुनिश्चित किया जा सके।

जिला स्तर पर होगा आन्दोलन : टिकैत

भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने कहा कि किसानों ने सरकार के प्रस्ताव को खारिज कर दिया है। आगे के आन्दोलन की रणनीति बनाई जा रही है। सरकार से कानूनों के मुद्दे पर बातचीत के सभी विकल्प भी खुले हैं। आन्दोलन जिला स्तर पर होगा। किसान अब यहां से या तो कानून रद्द कराकर लौटेगा या मरकर ही वापस जाएगा। यह किसान का वनवास है।

पंजाब, हरियाणा का विरोध ज्यादा क्यों?

एपीएमसी के तहत पूरे देश में सरकार की तरफ से खरीद का राष्ट्रीय औसत 10 प्रतिशत से भी कम है। पंजाब में यह पूरे देश का लगभग 90 प्रतिशत है तो खुले बाजार में लगभग 10 प्रतिशत। वहीं दूसरी ओर पूरे देश की लगभग 6000 एपीएमसी मंडियों में से लगभग एक तिहाई मंडियां यानि 33 प्रतिशत मंडिया केवल पंजाब में है।

लिहाजा एमएसपी एवं एपीएमसी मंडिया समाप्त होने की स्थिति में पंजाब एवं उसके आस-पास के राज्यों के किसानों को सबसे ज्यादा प्रभावित होने की स्थिति के कारण इन राज्यों के किसान कानूनों को वापस लेने की मांग पर अड़े हुए हैं। उन्हें डर है कि प्राइवेट व्यापारी उनका शोषण कर सकते हैं। पंजाब ने कृषि विस्तार सेवाओं हेतु 1991-92 से 1988-99 तथा 2001 से 2003-04 हेतु राष्ट्रीय उत्पादक पुरस्कार प्राप्त किया है।

पंजाब में एपीएमसी मंडियों में अच्छा इंफ्रास्ट्रक्चर होने से किसानों, आढ़तियों, व्यापारियों और मंडी में काम करने वाले मजदूरों से लेकर खेतिहर मजदूरों का नुकसान होने की आशंका है। हरित क्रांति के कारण कृषि और आर्थिक सिस्टम सभी प्रांतों में अलग-अलग हे। 2012-13 में हुए सर्वे में पता चला था कि केवल 33.2 प्रतिशत चावल और 39.2 प्रतिशत गेहूं किसानों को ही एमएसपी के बारे में जानकारी है। 1966-67 में पहली बार गेहूं के लिए एमएसपी का ऐलान किया गया था।

कृषि कानूनों को रद्द करे सरकार

नए कृषि कानूनों से देश का किसान खुश नहीं है। इसलिए कानूनों को तुरन्त रद्द करना चाहिए। न्यूनतम समर्थन मूल्य(एमएसपी) को लेकर नया कानून बनाने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। किसानों की कृषि उपज की एमएसपी पर गारंटी खरीद को इसमें शामिल करने की जरूरत है। आजादी के बाद नौकरीपेशा लोगों का वेतन लगभग डेढ़ से दो गुणा बढ़ा है, परन्तु किसानों को उस अनुपात में लाभ नहीं मिल पाया है। कृषि मंत्रालय के एमएसपी व दूसरी मांगों को मानने के लिए कृषि कानूनों में संशोधन के प्रस्ताव से भी कुछ नहीं होने वाला है। संशोधित प्रस्ताव में सिर्फ एमएसपी जारी रहने का आश्वासन दिया गया है। सरकार को कानून बनाने में क्या परेशानी है? सरकार को एमएसपी व गारंटी खरीद कानून बनाने के लिए किसान संगठनों के प्रतिनिधियों, कृषि क्षेत्र के विशेषज्ञों, अर्थशास्त्री व दूसरे हितधारकों के साथ व्यापक चर्चा करनी चाहिए। एमएसपी से महज 6 फीसदी किसानों को लाभ मिलेगा। शेष 94 प्रतिशत किसानों की गारंटी आय कौन सुनिश्चित करेगा। सरकार किसानों की सुनिश्चित आय गारंटी के रास्ते भी खोजने होंगे। इसके साथ ही देश के 50 फीसदी उपभोक्ताओं के हितों का संरक्षण करना होगा। किसानों के मन में खेतीबाड़ी को कॉर्पोरेट के हवाले करने के डर को दूर करने की जरूरत है। अब समय आ गया है जब देश के अन्नदाता के साथ न्याय किया जाए।

- देवेन्द्र शर्मा, कृषि विशेषज्ञ

किसान आन्दोलन से सुप्रीम कोर्ट चिंतित

किसानों व प्रदर्शन से जुड़ी याचिकाओं पर सीजेआई एसए बोबडे की अध्यक्षता वाली पीठ ने सुनवाई के दौरान चिंता जाहिर करते हुए कहा कि सरकार और किसानों के बीच बातचीत से विवादित मुद्दों का हल नहीं हो पा रहा है। सरकार को चाहिए कि वह इन मुद्दों का जल्द निपटारा करें। अन्यथा किसानों का प्रदर्शन राष्ट्रीय मुद्दा बनेगा। कोर्ट ने किसाना संगठनों को भी पक्षकार बनाने के निर्देश दिए। कोर्ट ने कहा कि प्रदर्शन मौलिक अधिकार है, हां इससे किसी दूसरे का जीवन प्रभावित नहीं होना चाहिए। किसान नेताओं ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के सुझाव हमारी नैतिक जीत है। कोर्ट ने कहा कि इस मामले में विशेषज्ञ कमेटी गठित करनी होगी जिसमें किसान संगठन, केन्द्र सरकार के अफसर व कृषि कानून विशेषज्ञ रखे जा सकते हैं। मामले की सुनवाई अब वैकेशन बेंच में होगी।

बंद ने दिखाया कि कानूनों को रद्द करने की जरूरत

पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह ने कहा कि बंद के जरिए किसानों ने जता दिया है कि कृषि कानूनों को निरस्त किया जाना चाहिए। तीनों नए कानून किसान विरोधी हैं और हितधारकों के साथ बिना चर्चा के इन्हें लाया गया। सिंह ने किसानों को ऐसे लोगों से सावधान रहने को कहा है जो अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए प्रदर्शन के दौरान शांतिपूर्ण माहौल बिगाड़ने का प्रयास कर सकते हैं। सरकार को चाहिए कि कानूनों को वापस ले। किसानों से उत्पाद खरीदने के लिए निजी कंपनियों को कोई नहीं रोक रहा, लेकिन पहले से व्यवस्थित ढांचे की कीमत पर इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

दो वर्ष जन सेवा के

PWP : पब्लिक वेलफेयर पोर्टल (जन कल्याण पोर्टल)

18 दिसंबर, 2020 से प्रारम्भ

: अपनी तरह का एकमात्र पोर्टल जहां एक ही स्थान पर उपलब्ध है :

सभी सरकारी योजनाओं में पात्रता, शर्तें, लाभ आदि की जानकारी
सरकार की उपलब्धियां एवं नवाचारों की जानकारी
आमजन के लिए उपयोगी परिपत्र/आदेशों का संकलन

इंदिरा रसोई योजना-प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में जरूरतमंदों को 8 रु. में भोजन की व्यवस्था। अब तक 1 करोड़ 12 लाख भोजन थाली उपलब्ध कराई। सरकार द्वारा 12 रुपये प्रति थाली अनुदान।

कोविड के कारण विद्युत बिलों के संबंध में 1.05 करोड़ घरेलू एवं 14.50 लाख कृषि सहित अन्य उपभोक्ताओं को दी गई बिल जमा कराने की अवधि में छूट के कारण 310 करोड़ का वित्तीय भार राज्य सरकार द्वारा वहन किया गया।

गत दो वर्षों में किसानों के बिजली बिलों के पेटे 27,229 करोड़ एवं घरेलू उपभोक्ताओं को 968 करोड़ की सब्सिडी प्रदान की। पूरे 5 वर्ष कृषि हेतु बिजली की दरें नहीं बढ़ाने का निर्णय। 1 लाख 61 हजार नये विद्युत कनेक्शन कृषि हेतु जारी।

कृषि जिन्सों की बेहतर विपणन व्यवस्था के लिए 643 ग्राम सेवा/क्रय विक्रय सहकारी समितियों एवं राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम के भण्डारगृहों को निजी गौण मण्डियों का दर्जा दिया।

राजस्थान कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यवसाय एवं कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति - 2019 : किसानों को पूंजी एवं ब्याज लागत पर 2 करोड़ रुपये तक का अनुदान। सुगम ऋण हेतु 500 करोड़ रुपये के कोष का सृजन।

सहकारी बैंकों के 61 लाख ऋणी इकाइयों को 19,323 करोड़ रु. के ब्याज मुक्त फसली ऋण वितरित-12.67 लाख नये किसान भी शामिल।

सहकारी बैंकों के 20.85 लाख किसानों के 8 हजार करोड़ रुपये के फसली ऋण माफ।

हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने के लक्ष्य के तहत 15 और जिलों में नये मेडिकल कॉलेज स्वीकृत, अब 33 में से 30 जिलों में 31 सरकारी मेडिकल कॉलेज होंगे।

33 लाख निराश्रित व असहाय परिवारों को 3,500 रुपये प्रति परिवार की दर से 1,144 करोड़ रु. की सहायता।

कोरोना के बेहतर प्रबंधन में राजस्थान बना मॉडल। सभी जिलों के सरकारी अस्पतालों में मुफ्त जांच व इलाज। हैल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर को दी मजबूती। ऑक्सीजन बेड, आईसीयू बेड, वेंटिलेटरों, ऑक्सीजन प्लांट्स में बड़े पैमाने पर वृद्धि।

713 प्रकार की दवाइयां व 90 प्रकार की जांच निःशुल्क। कैंसर, हृदय, सांस और गुर्दा रोग जैसी गंभीर बीमारियों की दवा भी निःशुल्क। 20 उपजिला व 21 जिला अस्पतालों में सेन्ट्रलाइज्ड ऑक्सीजन पाइपलाइन।

आयुष्मान भारत महात्मा गांधी स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू। इसमें 10 लाख नये परिवार जोड़कर 1.10 करोड़ परिवारों को मुफ्त इलाज की सुविधा।

प्रदेश में सड़कों के विकास पर 10,579 करोड़ रु. व्यय कर 24,100 किलोमीटर सड़कों का निर्माण। जिसमें 1650 करोड़ रु. से 3923 किलोमीटर नवीन सड़कें शामिल।

नया सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग लगाने पर तीन साल तक किसी अनुमति एवं निरीक्षण से मुक्ति। उद्योग के सभी समाधान के लिए 'वन स्टॉप शॉप' व्यवस्था। राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2019 लागू।

पचपदरा (बाड़मेर) में 43 हजार करोड़ लागत की रिफाइनरी परियोजना पर अब तक 5 हजार करोड़ रुपये का व्यय तथा 25 हजार करोड़ के कार्यादेश जारी।

''राजस्थान सामाजिक सुरक्षा लघु एवं सीमान्त वृद्धजन कृषक सम्मान पेंशन नियम 2019'' जारी। 2 लाख 80 हजार किसान लाभान्वित।

पशुधन हेतु सर्वाधिक उपयोगी दवाइयां निःशुल्क उपलब्ध, 567 लाख पशुओं का उपचार व 786 लाख पशुओं का टीकाकरण।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण। EWS कोटे में अचल सम्पत्ति की शर्त हटाकर 8 लाख प्रतिवर्ष आमदनी को एकमात्र आधार माना।

गौशालाओं को अब तक 822 करोड़ रु. की सहायता। पशुपालक किसानों के लिए दुग्ध संकलन पर 2 रु. प्रति लीटर अनुदान।

प्रदेश में प्रथम भूमिगत मेट्रो रेल परियोजना जयपुर में शुरू।

राजस्थान सिलिकोसिस नीति-2019 : पीड़ित व्यक्ति को पुनर्वास के लिए 3 लाख रुपये की सहायता। प्रति माह रु. 1,500 की पेंशन सहायता।

राजस्थान सौर ऊर्जा नीति - 2019 तथा राजस्थान पवन एवं हाईब्रिड ऊर्जा नीति - 2019: पर्यावरण संरक्षण, निवेश और रोजगार को बढ़ावा देने की दिशा में बड़ा कदम।

ग्रामीण विकास पंचायती राज : प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना में स्वीकृत 6.43 लाख आवास में से 5 लाख आवास पूर्ण। आवास निर्माण पर 5,410 करोड़ रु. व्यय। सर्वाधिक आवास पूर्ण करने पर राज्य को प्रथम पुरस्कार। 57 नई पंचायत समितियां बनायी।

विशेष योग्यजनों को सरकारी सेवाओं में आरक्षण 3 से बढ़ाकर 4 प्रतिशत। वृद्धों, विधवाओं और एकल महिलाओं के लिए पेंशन वृद्धि।

79,671 युवाओं को सरकारी नौकरियां दी। बेरोजगार युवाओं को 1,519 डेयरी बूथ आवंटित।

राजस्थान स्टेट गेम्स का आयोजन करने वाला पहला प्रदेश। पदक विजेता 29 खिलाड़ियों को आउट ऑफ टर्न आधार पर नौकरियां दी (6 डीएसपी रैंक भी), 250 प्रकरण प्रक्रियाधीन।

मनरेगा में टिकाऊ परिसंपत्तियों को प्राथमिकता। 99.82 फीसदी मजदूरी भुगतान 15 दिवस में।

राजस्थान देश में पहला राज्य है, जहां संविदा/मानदेय कर्मियों सहित सभी कर्मचारियों को कोरोना ड्यूटी के दौरान कोरोना से मृत्यु होने पर आश्रितों को 50 लाख की सहायता।

9 वृहद पेयजल परियोजनाओं से 5 हजार ग्राम/ढाणियों को एवं 14 शहरों को (आंशिक) सतही स्रोत से शुद्ध पेयजल आपूर्ति।

जन सूचना पोर्टल-94 योजनाओं की 261 प्रकार की सूचनाएं उपलब्ध।

सभी बालक/बालिकाओं को बेहतर शिक्षा के लिए 201 महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) खोले, जिनमें 68,540 विद्यार्थी नामांकित। नये 90 राजकीय महाविद्यालय खोले।

कृषक कल्याण कोष : 2,000 करोड़ रुपये का कोष सृजित।

इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना : चार जनजाति जिलों में द्वितीय संतान के समय प्रत्येक गर्भवती व धात्री महिला को रु. 6,000 की वित्तीय सहायता।

प्रत्येक पुलिस जिले में महिला अपराधों के लिये विशेष जांच इकाई बनाई। डीवाईएसपी रैंक के अधिकारी का पदस्थापन। आगन्तुकों के लिये थानों में स्वागत कक्ष स्थापित। एंटी करप्शन ब्यूरो को मजबूत किया एवं शिकायत के लिये 1064 हेल्पलाइन शुरू।

थाने में एफआइआर दर्ज नहीं होने पर देश में पहली बार पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पंजीकरण व्यवस्था। एफआईआर दर्ज करने को अनिवार्य बनाने से धारा 156(3) के तहत कोर्ट से दर्ज होने वाली एफआईआर में सारभूत कमी।

80 हजार ई-मित्र कियोस्क पर आमजन को उनके घर के नजदीक 450 सेवाएं उपलब्ध।

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

लक्ष्य एक, कदम अनेक...

पंचायत एवं निकाय चुनाव परिणाम

पंचायत में भाजपा तो निकाय में कांग्रेस भारी

सनत जोशी

राजस्थान के 21 जिलों में 4 चरणों में हुए जिला परिषद एवं पंचायत समिति सदस्यों के चुनाव में भाजपा के 12 और कांग्रेस के 5 जिला प्रमुख बने। इन जिलों की 222 पंचायत समितियों में से भाजपा एवं कांग्रेस ने 98-98 पंचायत समितियों में अपने प्रधान बनाए। जबकि 26 जगहों पर निर्दलीय और बागियों ने भाजपा-कांग्रेस से समर्थन लेकर प्रधान का चुनाव जीता। पंचायत चुनाव परिणाम में भाजपा को 93 और कांग्रेस को 81 पंचायत समितियों में बहुमत मिला था। भाजपा के बहुमत वाले अजमेर और बूंदी में फूट पड़ी और यहां भाजपा के बागियों को कांग्रेस ने अपना समर्थन देकर प्रमुख बनाया। तो कांग्रेस के बहुमत वाले जैसलमेर में फूट का फायदा उठाते हुए सेंधमारी कर भाजपा ने प्रमुख की सीट जीत ली। कांग्रेस ने इसकी भरपाई बराबर सदस्यों वाले बाड़मेर में क्रॉस वोटिंग के सहारे जिला प्रमुख सीट अपने नाम कर ली। नागौर में कांग्रेस और भाजपा को समान वोट मिले। लॉटरी प्रक्रिया से भाजपा का जिला प्रमुख बना। ठीक इसी प्रकार लक्ष्मणगढ़ में लॉटरी से कांग्रेस ने बाजी मारी।

ममता कुंवर पंवार
जिला प्रमुख, उदयपुर

रतनी देवी जाट
जिला प्रमुख, राजसमंद

भाजपा ने मारी बाजी

उदयपुर में भाजपा की ममता व राजसमंद की रतनी देवी जिला प्रमुख

जिला परिषद उदयपुर व राजसमंद में भाजपा के जिला प्रमुख बन गए हैं। उदयपुर में ममता कुंवर पंवार तो राजसमंद में रतनी देवी जाट जिला प्रमुख बनी। ममता को 27, विशल्या को 15 वोट मिले। एक निर्दलीय सदस्य ने मतदान में भाग नहीं लिया। इधर उदयपुर जिले की 20 पंचायत समितियों में से 12 में कांग्रेस, 7 में भाजपा व एक में जनता सेना का प्रधान बना। सलूम्बर में भाजपा का बहुमत होने के बावजूद भी क्रॉस वोटिंग से प्रधान कांग्रेस का बन गया। इधर राजसमन्द जिला प्रमुख पद पर रतनी देवी जाट ने भाजपा से, सूरज देवी गुर्जर ने कांग्रेस और कांग्रेस से जिला परिषद सदस्य चुनी गई अंजू कुंवर ने बतौर निर्दलीय नामांकन भरा। सूरज देवी ने नामांकन वापस ले लिया। भाजपा की रतनी देवी को पार्टी के पूरे 17 और शेष 8 मत निर्दलीय अंजू कुंवर को मले। राजसमन्द जिले की आठ पंचायत समितियों में से चार में भाजपा, तीन में कांग्रेस व एक में निर्दलीय का प्रधान बना।

निकाय चुनावों में कांग्रेस ने दिखाया दम

पंचायती राज चुनावों में जहां भाजपा का पलड़ा भारी रहा। वहीं 21 दिसम्बर को घोषित हुए निकाय चुनाव परिणामों में कांग्रेस ने बाजी मारी ली। 12 जिलों के 50 निकायों(43 नगर परिषद् एवं 7 नगर पालिका) में कांग्रेस के 36, भाजपा के 12 और 2 निर्दलीय निकाय प्रमुख बने। हालांकि कांग्रेस को 50 निकायों में से 14 पर बहुमत मिला था, परन्तु 22 निर्दलियों के सहारे उसने अपने प्रमुखों की संख्या 36 कर ली। दूसरी ओर भाजपा को 4 निकायों में बहुमत मिला था, वह निर्दलियों के सहारे 12 में निकाय प्रमुख बनाने में कामयाब रही। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने इस जीत के लिए सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नेताओं को धन्यवाद दिया। वहीं सदन में उपनेता प्रतिपक्ष, भाजपा राजेन्द्र राठौड़ ने सरकार पर सरकारी मशीनरी के दुरूपयोग का आरोप लगाते हुए कहा कि इन चुनावों में सरकार के स्तर पर बड़े पैमाने पर गड़बड़ी की गई।

कांग्रेस बोर्ड : बहरोड़, तिजारा, बारां, अंता, बयाना, भुसावर, डीग, कामां, कुम्हेर, नदबई, नगर, वैर, दौसा, बांदीकुई, लालसोट, बाड़ी, राजाखेड़ा, चाकसू, चौमूं, जोबनेर, किशनगढ़-रेनवाल, कोटपुतली, फुलेरा, सांभर लेक, शाहपुरा, विराटनगर, पिपाड़सिटी, टोडाभीम, करौली, हिंडौन, रामगंजमंडी, सवाईमाधोपुर, केसरसिंहपुरी, करणपुर, पदमपुर, गजसिंहपुर।

भाजपा का बोर्ड : खेड़ली, किशनगढ़बास, खैरथल, राजगढ़, बिलाड़ा, इटावा, गंगापुर सिटी, आबू रोड, रायसिंह नगर, अनूपगढ़, विजयनगर, सादुलशहर।

कांग्रेस समर्थित निर्दलीय : धोलपुर। **कांग्रेस बागी :** बगरू।

61 साल में पहली बार 25 साल की सबसे युवा प्रमुख

जिले में 1959 से पंचायतीराज चुनाव शुरू हुए थे। पहली बार कांग्रेस के रोशनलाल शर्मा प्रमुख बने। पहली महिला प्रमुख भाजपा की वंदना मीणा बनीं। ममता 61 साल में उदयपुर की पहली सबसे युवा प्रधान बन गई।

25 साल में चौथी महिला प्रमुख

नाम	पार्टी	कब से कब
वंदना मीणा	भाजपा	1995 से 1999
सज्जन कटारा	कांग्रेस	1999 से 2000
मधु मेहता	कांग्रेस	2010 से 2015
ममता कुंवर	भाजपा	2020 से

परिवारवाद रहा हावी

रेशम मालवीया
जिला प्रमुख, बांसवाड़ा

सूर्यादेवी अहारी
जिला प्रमुख, डूंगरपुर

डूंगरपुर में जीत कर भी हारी बीटीपी

डूंगरपुर में कुल 27 पंचायत समितियों में से 13 पर बीटीपी समर्थित निर्दलीय विजयी हुए थे। भाजपा के 8 व कांग्रेस के 6 प्रधान जीते थे। यहां भाजपा-कांग्रेस ने हाथ मिला लिया। भाजपा की महिला सदस्य निर्दलीय सूर्या देवी अहारी मैदान में उतरी और कांग्रेस व भाजपा के समर्थन से जिला प्रमुख का पद जीत लिया।

बांसवाड़ा में कांग्रेस का दबदबा बरकरार

बांसवाड़ा में कांग्रेस की ओर से रेशम मालवीया जिला प्रमुख बनीं। वे विधायक एवं पूर्व मंत्री महेन्द्रजीत सिंह मालवीया की पत्नी है। बांसवाड़ा में कुल 11 पंचायत समितियों में से 7 कांग्रेस, 3 भाजपा व 1 में निर्दलीय जीते हैं।

चित्तौड़गढ़ में जीती भाजपा

चित्तौड़गढ़ में भाजपा के सुरेश धाकड़ जिला प्रमुख पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए। वे बेंगू से विधायक भी रहे हैं। यहां पर कुल 11 पंचायत समितियों में से 9 पर भाजपा और 2 पर कांग्रेस विजयी रही।

मावली से पुष्करलाल डांगी पांच वोट से जीते

कांग्रेस के पुष्कर लाल डांगी मावली पं. स. से 5 वोट से जीत कर प्रधान बने। डांगी पूर्व में मावली से विधायक रह चुके हैं।

उदयपुर की विभिन्न पंचायत समितियों में नवनिर्वाचित प्रधान

पं. समिति	प्रधान	पार्टी	राजनीतिक पृष्ठभूमि
मावली	पुष्कर डांगी	कांग्रेस	पूर्व विधायक, मावली
सराड़ा	बसंती मीणा	कांग्रेस	पूर्व विधायक, सलूम्बर
लसाड़िया	लीला देवी	भाजपा	धरियावद विधायक की बहू
झाड़ोल	राधा देवी	कांग्रेस	सरपंच चुनाव लड़ी थी
जयसमंद	गंगाराम	कांग्रेस	रिटायर्ड आरआई
गोगुन्दा	सुंदर गमेती	भाजपा	पूर्व उपप्रधान राणा की पत्नी
सायरा	सवाराम गमेती	कांग्रेस	पूर्व सरपंच, चित्रावास
कोटड़ा	सुगना देवी	भाजपा	नया चेहरा
फलासिया	शंभूलाल	कांग्रेस	पहले चुनाव में ही विजयी
ऋषभदेव	केसरदेवी	कांग्रेस	दो बार सरपंच रह चुकी

पं. समिति	प्रधान	पार्टी	राजनीतिक पृष्ठभूमि
झल्लारा	धूलीराम	कांग्रेस	-
खेरवाड़ा	पुष्पा देवी	कांग्रेस	बंजारिया की सरपंच
वल्लभनगर	देवीलाल	भाजपा	नया चेहरा
बड़गांव	प्रतिभा नागदा	भाजपा	नया चेहरा
गिर्वा	सज्जन कटारा	कांग्रेस	पूर्व विधायक, ग्रामीण
भींडर	हरिसिंह	जनता सेना	नया चेहरा
सलूम्बर	गंगा देवी	कांग्रेस	पूर्व विधायक की पत्नी
कुराबड़	कृष्णा मीणा	भाजपा	नया चेहरा
सेमारी	दुर्गा प्रसाद	भाजपा	क्रय-विक्रय समिति अध्यक्ष
नयागांव	कमला देवी	कांग्रेस	विधायक के भाई की पत्नी

वेदांत और अध्यात्म के दीप पुरुष स्वामी विवेकानंद उन गिने-चुने संन्यासियों में हैं जिनकी कीर्ति दुनिया के कोने-कोने में बिखरी हुई है। भारतीय संस्कृति, धर्म और आध्यात्म के प्रकांड विद्वान स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। 12 जनवरी सन् 1863 को उनका जन्म कोलकाता में हुआ था।

विश्व विभूति स्वामी विवेकानंद

16 वर्ष की आयु में नरेन्द्र नाथ दत्त ने कलकत्ता से एंट्रेंस की परीक्षा पास की। अपने विद्यार्थी जीवन में विवेकानन्द बेहद मेधावी और महान जिज्ञासु छात्र के रूप में प्रसिद्ध थे। जब वह बड़े हुए तो उन पर पश्चिम के नास्तिकवादी दार्शनिक हर्बट स्पेंसर का गहरा प्रभाव पड़ा। लेकिन जब वह अपने युग के महान संत और समाज सुधारक श्री रामकृष्ण परमहंस से मिले तो वह महान आस्तिक विवेकानंद में बदल गये। स्वामी विवेकानंद श्री रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे। वह भारत के महान आध्यात्मिक गुरु और प्रभावशाली वक्ता थे। श्री रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा ग्रहण करने के बाद स्वामी विवेकानन्द ने आजन्म संन्यासी जीवन बिताने का व्रत लिया। उन्होंने सन 1890 में पूरे भारत की विस्तृत यात्रा की। वास्तव में उन्हीं दिनों वह नरेन्द्र नाथ से स्वामी विवेकानन्द में बदले। 31 मई सन् 1893 को वह अमरीका में हो रहे सर्वधर्म सम्मेलन में शिरकत करने के लिए पहुंचे। वहां 11 सितम्बर 1893 को उन्होंने अपना वह ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसके समक्ष दुनिया भर के धर्मशास्त्रियों और विद्वानों का सिर उनके समक्ष श्रद्धा से झुक गया। गौरतलब है कि वह इस सम्मेलन में बतौर वक्ता आमंत्रित नहीं थे। लेकिन अपने तूफानी भाषण के बाद वह उस धर्म सम्मेलन के चुम्बकीय व्यक्तित्व बन गये। उनके धर्म व अध्यात्म से पगे रोमांचित कर देने वाले भाषण के बाद लाखों लोग उनका शिष्यत्व ग्रहण करने के लिए लालायित हो उठे। स्वामी जी अमरीका से सन् 1895 में इंग्लैण्ड रवाना हुए और वहां भी भारतीय धर्मों व दर्शन का प्रसार किया। सन् 1897 में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और अमरीका में वेदांत सोसायटी तथा शांति आश्रम की स्थापना की। विवेकानंद के अमरीका और यूरोप भ्रमण के बाद वहां बसे भारतीयों को अपनी संस्कृति और राष्ट्रीयता से गौरव की अनुभूति हुई। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के अवसान के बाद स्वामी विवेकानंद ने भारतीय अध्यात्म और मानवतावाद के प्रचार का बीड़ा उठाया, मगर 8 जुलाई 1902 को अल्पायु में ही स्वर्ग सिधार गये। योग, राजयोग तथा ज्ञानयोग जैसे महान ग्रंथों की रचना करके विवेकानंद ने युवा जगत को एक नई राह दिखायी। जिसका प्रभाव जब तक भारतीय सभ्यता व संस्कृति है, अक्षुण्ण रहेगा।

– मदन पटेल

KPL

- Rock Phosphate Powder
- China Clay
- Sandy Clay
- Dicalcium Phosphate
- Khicha Jaivik Khad
- Khicha PROM (Phosphate Rich Organic Manure)

Mineral Lumps

- Kyanite Lumps
- Pyrophyllite Lumps
- Dolomite Lumps
- Feldspar Lumps
- Bentonite Lumps
- Soapstone Lumps
- Sillimanite Lumps
- Quartz Lumps

KHICHA PHOSCHEM LTD.

204, Vinayak Business Centre, Fatehpura, Pulla Road
Udaipur - 313 001 (Raj) Phone: 0294-2452151 (O) 6451366, 6451377
2451332 (R). (W) Madri: 0294-2490829, 6451257 Fax: 0294-2452149
E-mail: khichaphoschem@rediffmail.com Website: www.khichaphoschem.com

RK PHOSPHATES
PRIVATE LIMITED
UDAIPUR

22+ States Across India

- Andhra Pradesh
- Assam
- Bihar
- Chhattisgarh
- Goa
- Gujarat
- Haryana
- Himachal Pradesh
- Jharkhand
- New Delhi
- Karnataka
- Madhya Pradesh
- Maharashtra
- Odisha
- Punjab
- Rajasthan
- Tamil Nadu
- Telangana
- Jammu & Kashmir
- Uttarakhand
- Uttar Pradesh
- West Bengal

- **Animal Feed Supplements**
- **Natural Minerals**

Corporate Office: **"Singhvi House"** , 6 - Residency Road, Udaipur - 313 001, Rajasthan
www.rkphosphates.com

सत्याग्रह शारीरिक बल का प्रयोग नहीं है। सत्याग्रही शत्रु को कष्ट नहीं देता, उसका नाश नहीं चाहता। वह बंदूक आदि किसी भी प्रकार के शस्त्रों का प्रयोग नहीं करता। सत्याग्रह विशुद्ध आत्मिक शक्ति है, आत्मा का सत्य स्वरूप है। पराजय शब्द उसके शब्दकोष में है ही नहीं।

सत्याग्रह विशुद्ध आत्मिक शक्ति

प्रवीण चन्द्र छाबड़ा

गांधीजी की सत्य और अहिंसा की प्रयोग यात्रा में 'सत्याग्रह' शब्द की खोज ने उनके समूचे जीवन-दर्शन, व्यवहार और कार्य-प्रणाली को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान कर दी। गांधीजी के लिए 'सत्याग्रह' शब्द से अधिक भावार्थ में मंत्र बन गया, जिसने देश की आत्मा को जगाने के साथ पूरी बीसवीं सदी को अतिशयकारी बना दिया। सत्याग्रह अपने स्वरूप में कथनी और करनी दोनों का बाधक होने के अलावा एक साथ ही समय में संदेश, निर्देश व आदेश लिए रहा है। दक्षिण अफ्रीका में 'पेसिव रेजीस्टेन्स' को सार्थक अर्थ देने के लिए गांधीजी को अहसास हुआ कि अपनी भाषा में इसकी अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

28 दिसम्बर 1907 को उन्होंने अपने पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' में 'कुछ अंग्रेजी शब्द' शीर्षक से एक टिप्पणी दी – 'स्वदेशाभिमान की एक शाखा का यह भी मानना है कि हम अपनी भाषा का मान रखें, उसे ठीक तरह से बोलना सीखें और विदेशी भाषा के शब्दों का उपयोग यथासंभव कम करें। उन्होंने पेसिव रेजीस्टेन्स, पेसिव रेजिस्टर, कार्टून, सिविल डिसओबिडिएन्स' आदि के लिए संस्कृत व उर्दू में उपयुक्त शब्द बताने के लिए अपने पत्र में नाम प्रकाशित करने तथा कानून की दस पुस्तकें देने की पेशकश की। उन्होंने स्पष्ट किया कि पुस्तकें भेंट करने का उद्देश्य प्रलोभन देना नहीं वरन् सम्मान देना है। दक्षिण अफ्रीका में बने खूनी कानून के बारे में जानकारी देना और उसका प्रचार करना है। हम चाहते हैं कि हमारे पाठक भेंट पाने के लिए नहीं वरन् स्वदेश हित के लिए कष्ट उठाकर इन शब्दों का शब्दार्थ ही नहीं भावार्थ देंगे। गांधीजी की इस आशय की टिप्पणी पर प्राप्त अनेक शब्दों में मगनलाल गांधी का 'सदाग्रह' भी था, जिसे गांधी जी ने संशोधन के साथ 'सत्याग्रह' मान्य कर लिया। इससे पूर्व पेसिव रेजीस्टेन्स के लिए 'निष्क्रिय प्रतिरोध' का प्रयोग होता रहा।

पेसिव रेजीस्टेन्स के नाम से इंग्लैण्ड में सफरेजिट, चोट चाहने वाली महिलाओं के आन्दोलन का समावेश था। इनका मकानों का जलाना, अपने को कष्ट देना, कारावास में उपवास करना आदि को भी पेसिव रेजीस्टेन्स माना जाता था। ब्रिटिश लोकसभा में शिक्षा विधेयक पर बहस के दौरान विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि पेसिव रेजीस्टेन्स ब्रिटिश संविधान के अनुसार पूर्णत: वैध है। यही बात जनरल स्मट्स ने दक्षिण अफ्रीका के आंदोलन के संबंध में कही थी। इस संबंध में गांधीजी ने 2 सितम्बर 1917 के एक लेख में स्पष्ट किया था कि दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी हिन्दुस्तानी अपने कष्ट निवारण के लिए जिस शक्ति का प्रयोग कर रहे थे, उसके लिए पेसिव रेजीस्टेन्स शब्द ही काम ले रहे थे, उनके पास अन्य कोई शब्द नहीं था। उनका आन्दोलन निष्क्रिय नहीं था वरन् सक्रिय था। अपने आग्रह के कारण हर कष्ट को धैर्यपूर्वक उठा रहे थे। मृत्यु का भय भी उन्हें अपने सत्य से नहीं डिगा रहा था। जेल को महल मानते थे। ऐसे में 'सत्याग्रह' उनके आन्दोलन की सही अभिव्यक्ति दे सका। सत्याग्रह के प्रयोग में द्वेष का सर्वथा अभाव है। सत्याग्रह व्रत है, जो लेने के बाद प्राण के साथ ही जा सकता है। सत्याग्रह में हार तो होती ही नहीं है। दक्षिण अफ्रीका से भारत के लिए प्रस्थान करने से पूर्व गांधीजी ने जुलाई 1914 के 'इण्डियन ओपिनियन ' के विशेषांक में स्पष्ट किया कि सत्याग्रही के बल का हिंसा और सभी प्रकार के उत्पीड़न से वही संबंध है, जो प्रकाश का अंधकार से है। हिंसा तो आत्मिक बल का अभावात्मक पक्ष है। उन्होंने भारत जाने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मैं सत्याग्रही के रूप में अपनी अपूर्णता को अच्छी तरह समझ सकूं और फिर अपने को पूर्ण बनाने का प्रयास करूं, क्योंकि मेरा विश्वास है कि पूर्णता के निकट पहुंचने की संभावना भारत में अधिक है। उन्होंने विदाई में दिए गए समारोहों में सलाह दी कि कैसा भी अवसर आए, आप लोग हर अन्याय व अत्याचार के सामने धैर्य के साथ डटे रहे, सहन करना और क्षमा करना ही सत्याग्रही की पहचान है। यह सबसे श्रेष्ठ अस्त्र है, जो हर समय आपकी सहायता करेगा।

भारत आने के बाद सत्याग्रह की महिमा और उपयोगिता पर जुलाई 1916 को एक प्रश्न के उत्तर में गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के रहस्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जोहानिसबर्ग में एक पहाड़ी पर बैठे बातचीत के दौरान उन्होंने सरकारी गजट को देखा तो उसमें भारतवासियों के संबंध में कई कानून पास कर देने का उल्लेख था। उन्होंने उसका अनुवाद इण्डियन ओपिनियन में दिया और संघर्ष का आह्वान किया। पहले ही संघर्ष में बहुत लोग आए, कष्ट भी उठाया।

दूसरे संघर्ष में आरंभ में थोड़े ही लोग शामिल हुए, पर बाद में बढ़ते गए। गोपाल कृष्ण गोखले के पहुंचने पर सरकार ने समझौता किया और बाद में सरकार मुकर गई। तीसरे सत्याग्रह में अपेक्षा से भी कम केवल 16 लोग आए। लेकिन हम दृढ़ निश्चय के साथ डटे रहे। देखते-देखते हजारों लोग जुड़ गए जेलों में जगह कम पड़ गई और सरकार को वचन का पालन करना पड़ गया। इन बातों से सिद्ध हुआ कि सत्याग्रही जिस मार्ग से युद्ध करता है, वह सरल होता है। शस्त्र से युद्ध करने वाले को शस्त्र व दूसरों से अवलम्बन लेना पड़ता है। सत्याग्रही अकेला भी लड़ सकता है। सत्याग्रह में हमें पूर्ण संयमशील होना होता है। जिस संघर्ष में प्राण हथेली पर हों, वहां कोई बात असंभव नहीं है। सत्याग्रह के संघर्ष में लोगों में से कायरता निकाल कर पौरूष भरना, सत्य के पालन और परोपकार के निमित्त अनुकूल बनाना आवश्यक है।

सत्याग्रह शारीरिक बल का प्रयोग नहीं है। सत्याग्रह शत्रु को कष्ट नहीं देता, उसका नाश नहीं चाहता। वह बंदूक आदि किसी भी प्रकार के शस्त्रों का प्रयोग नहीं करता। सत्याग्रह विशुद्ध आत्मिक शक्ति है। पराजय शब्द उसके शब्दकोष में है ही नहीं।

गांधीजी के हर आचरण में अहिंसा का बल और सत्य के प्रति निष्ठा उपस्थित रही। सत्याग्रह को वे सर्व संकट निवारिणी संजीवनी मानते रहे। सत्याग्रही का कार्य ही उसका व्याख्यान है, सत्याग्रह वायु सा व्यापक है। वह किसी पर शस्त्र नहीं चलाता। गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ यह है कि हम जिसे चाहते हैं, वह सत्य हैं और हम उसके योग्य है तो उसे प्राप्त करने में मरणपर्यन्त प्रयत्न करेंगे। सत्य की सर्वदा जय है।

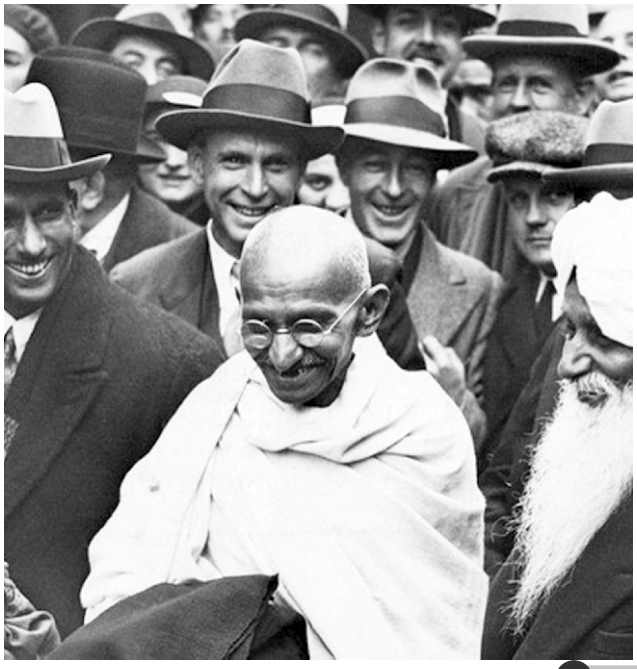

Naveen Jain
Director
9983174974

Nalwaya
Fittings Suppliers

A complete Range of Sanitary & Plumbing Solution

CERA
Reflects your Style

SENSOR
STAINLESS STEEL KITCHEN SINK

Supreme
PVC Plumbing Pipes and Plumbing Systems

CONTINENTAL
BATH FITTINGS

SUPREME™
Exclusive Bath Fittings

H.O.: Shop No. 1, First Floor
Kasturba Hospital
Delhigate, Udaipur (Raj.)
B.O. Off.: Ayad Road
Thokar Chouraha, Udaipur
Email: nalwayanaveen@gmail.com

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

0294-2410444

09414155797 (M)

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ ज्योतिष कार्यालय

कांतिलाल जैन
(ब्रह्मचारी)

जैन साधनानुसार हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र के विशेषज्ञ

नाकोड़ा रूप भवन

167, रोड नं. 11, अशोक नगर, माया मिष्ठान के पास, उदयपुर-313001 (राज.)

मिलने का समय : दोपहर 3 से सायं 7 बजे तक

नाकोड़ा रूप भवन

Ph: 022-24123857, 093220-90220 (M)

**ब्लॉक नं. 10, केलकर बिल्डिंग,
नयागांव के.ए. हाउसिंग सोसायटी,
प्लॉट नं. 60-बी,एस.एम. जाधव मार्ग,
कृष्णा हॉल के सामने, दादर (ईस्ट) मुम्बई-14**

रविवार चौकी एवं आरती

**मिलने का समय :
दोपहर 3 से
सायं 7 बजे तक**

कुछ का दिमाग तेज... तो कुछ शिकार में माहिर

– कपिल शर्मा

आकाश में उड़ते रंग-बिरंगे पक्षी भला किसे नहीं अच्छे लगते? इनमें कुछ तो इतने छोटे होते हैं कि उनका आकार एक बड़े पतंगे से ज्यादा नहीं होता, और कुछ का आकार हम मनुष्यों से भी बड़ा होता है। आज पूरी दुनिया में चिड़ियों की लगभग 8,600 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। आओ जानते हैं इन्हीं चिड़ियों से जुड़ी कुछ खास और मजेदार बातें -

जीवनकाल

दूसरे जीवों की तरह पक्षियों की भी एक निश्चित उम्र होती है। कुछ पक्षी बहुत ज्यादा दिनों तक जीवित रहते हैं, कुछ कम। बहुत से जंगली पक्षी अपनी उम्र पूरी होने से पहले ही शिकारियों द्वारा मार दिए जाते हैं। कुछ नन्हीं रंग-बिरंगी चिड़ियां अपने जीवन का पहला साल भी पूरा नहीं कर पाती हैं। उन्हें बिल्लियां, कुत्ते या अन्य जीव अपना शिकार बना लेते हैं या फिर वे बीमारियों से मर जाती हैं।

कम वजन, उड़ान ज्यादा

ऊंची उड़ान के लिए पक्षियों का वजन कम होना बहुत जरूरी है। इसलिए बहुत से पक्षियों का वजन कम करने के लिए प्रकृति ने उनकी हड्डियों को खोखला बनाया है। सुनहली चील का ही उदाहरण लीजिए, उसके पंखों का फैलाव 2.3 मीटर(लगभग 7.5 फीट) से ज्यादा होता है। लेकिन उसका वजन मनुष्य के एक नवजात शिशु से ज्यादा नहीं होता। अपने वजन के कारण ही ये पक्षी कई घंटों तक ऊंचे आकाश में तैरते रहते हैं।

छोटा दिमाग

हम मनुष्यों की तुलना में पक्षियों के मस्तिष्क का आकार बहुत छोटा होता है। इसीलिए उनमें सीखने की प्रवृत्ति ज्यादा नहीं होती। इसके बावजूद हर पक्षी अपने मस्तिष्क में ज्ञान का एक बड़ा भंडार लिए पैदा होता है। यह उनका स्वाभाविक या जन्मजात ज्ञान कहलाता है, जो उन्हें यह बताता है कि उन्हें कब, क्या और कैसे करना है। इसी जन्मजात ज्ञान के आधार पर ही वे अपने मां-बाप की नकल करके खाना, रहना, उड़ना आदि सीखते हैं।

सोने का ढंग अनोखा

ज्यादातर पक्षी पेड़ों की ऊंची डालों पर ही बैठे-बैठे सोते हैं। तुम कल्पना करो कि तुम्हें किसी पेड़ की ऊंची डाल पर खड़े-खड़े या बैठकर सोना पड़े तो? नहीं सो सकते न। लेकिन, पक्षी ऐसे ही सो लेते हैं और इस काम में सहायता करती है उनके पंजे की मजबूत पकड़। जैसे ही ये पक्षी पेड़ की पतली डाली पर बैठते हैं, उनके पंजे अपने आप डाली को कसकर पकड़ लेते हैं और ताले की तरह बंद हो जाते हैं। इसीलिए इतनी ऊंची डालों पर सोने पर भी ये गिरते नहीं।

गले में हड्डियों की भरमार

पक्षियों की एक खास बात और होती है, इनके पतले से गले में अन्य जानवरों की तुलना में बहुत ज्यादा हड्डियां होती हैं। ज्यादातर स्तनपायी जानवरों, यहां तक कि लम्बी गर्दन वाले जिराफ के गले में भी 7 हड्डियां होती है, जबकि बगुले के गले में लगभग 17 हड्डियां होती हैं। इन्हीं हड्डियों के कारण ही वह अपना शिकार आसानी से पकड़ लेता है और पंखों को साफ कर लेता है।

बिना दांत के

यह भी हैरान करने वाली बात है कि दुनिया में किसी पक्षी के कोई दांत नहीं होता। इनके दांतों की जगह पैनी नुकीली और मजबूत चोंच होती है, जो हमेशा बढ़ती रहती है और पूरे जीवनभर उनका साथ निभाती है। इसी चोंच से वे अपने दुश्मनों से लड़ती भी हैं। यही नहीं, कुछ पक्षी तो दांत न होने पर भी पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों तक निगल जाते हैं, जो कि उनके भोजन को पेट में पीसने में मदद करते हैं।

श्रद्धांजलि

जन्म :
2 फरवरी 1931

निधन :
30 जनवरी 2016

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल भोमट (झाड़ोल-फ.) क्षेत्र में घर-घर
शिक्षा की अलख जगाने वाले सरलमना, प्रेरक व्यक्तित्व, कीर्तिशेष

श्रीयुत पं. जीवतरामजी शर्मा

(संस्थापक, राजस्थान बाल कल्याण समिति)
की द्वितीय पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रद्धावनत :

राजस्थान बाल कल्याण समिति परिवार।

वृद्धावस्था को बनाएं सुखमय

युवावस्था में तो हम कई उतार-चढ़ाव सहन कर सकते हैं पर वृद्धावस्था में स्वयं को उतार-चढ़ाव में संभाल पाना मुश्किल होता है। वृद्धावस्था में होने वाले शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों से भी संतुलित जीवनशैली द्वारा कुछ हद तक बचा जा सकता है। वृद्धावस्था में ग्रीष्मकाल में अधिक व्यायाम न करें। धूप में अधिक समय तक बाहर न रहें। गर्म चटपटे और तीखे मसाले वाले भोजन का सेवन न करें।

– कल्पना गोयल

खान-पान वैसे तो इस अवस्था में सेहत संबंधी समस्याएं पहले किए गए आहार विकार के कारण आती है पर इस काल में भोजन पर विशेष ध्यान देना ही उचित रहता है।

- कम वसायुक्त भोजन का सेवन करें।
- भोजन हलका ही लें और निर्धारित समय पर भोजन लें।
- भोजन में हरी सब्जियों और मौसमी फलों को महत्वपूर्ण स्थान दें।
- दोपहर में भोजन के बाद छाछ का प्रयोग करें।
- चाय काफी का सेवन कम से कम करें।
- शाम की चाय 5 से 5.30 बजे तक पी लें।
- क्रीम रहित दूध अवश्य लें और उसी दूध के दही का सेवन करें।
- वृद्धावस्था में अकेलापन सबसे अधिक सताता है। प्रयास करें कि स्वयं को किसी न किसी सामाजिक कार्य में व्यस्त रखें और घर-परिवार के छोटे-छोटे कामों में मदद करें ताकि परिवार के सदस्यों में मदद करें ताकि परिवार के सदस्यों को बुढ़ापा बोझ न लग कर सहारा लगे।
- वृद्धावस्था में समय-समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच करवाते रहें और डॉक्टरी परामर्श के अनुसार दवा आदि का सेवन करें। तबीयत खराब होने पर लापरवाही न बरतें।
- भोजन ताजा खाना चाहिए। बासी भोजन इस आयु में पचाना मुश्किल होता है।
- वृद्धावस्था में शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन से अधिक लाभप्रद होता है।

- भोजन से पहले एवं तुरन्त बाद अधिक पानी नहीं पीना चाहिए।
- ठोस भोजन का सेवन कम करें। तरल और अर्द्धतरल भोजन अधिक लें।
- भोजन हमेशा नियत समय पर ही करें। भोजन हलका एवं संतुलित लें। भोजन से पूर्व सलाद और दाल-सब्जी और दही का सेवन करें। सलाद यदि खाने में मुश्किल हो तो उसे कद्दूकस कर खाएं।
- रात्रि का भोजन सोने से 3-4 घंटे पूर्व खा लेना चाहिए।
- सिर एवं पैरों के तलवों पर भी तेल की मालिश करें।

सौन्दर्य व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। सुन्दरता केवल स्वयं को नहीं वरन् देखने वालों को भी सुखानुभूति कराती है। खूबसूरत चेहरे हमेशा से ही सबको आकर्षक दिखते हैं परन्तु सर्दियां आते ही यदि इस खूबसूरत चेहरे का ध्यान न रखा जाए तो त्वचा रूखी, बेजान व झुर्रीदार बन जाती है। सर्दियों में तेल ग्रंथियां निष्क्रिय हो जाती हैं। जरा-सी सावधानी से आप सर्दियों में भी अपना चेहरा खूबसूरत व आकर्षक बनाए रख सकती हैं।

सर्दियों में भी दमकेगा चेहरा

– कमला गौड़

- दमकती त्वचा के लिए सिर्फ रोजमर्रा की त्वचा की देखभाल ही काफी नहीं, बल्कि सकारात्मक सोच और पौष्टिक भोजन भी उतना ही जरूरी है। इसलिए स्वस्थ त्वचा के लिए अच्छा खाइए और मन में अच्छे विचार लाइए। इस मौसम में अलसी के बीज, तिल, बादाम, सोया, पालक व सी फूड त्वचा के साथ शरीर के अंदरूनी हिस्सों के लिए बहुत उपयोगी हैं, क्योंकि इनसे शरीर को पोषण देने वाले तेल मिलते हैं।
- फिलहाल ठंड काफी ज्यादा है। ऐसे में कभी भी अपना चेहरा बिना धोए न सोएं। चाहे रात के दो ही क्यों न बज रहे हों। नींद लेने के बाद मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है और त्वचा में भी निखार आ जाता है। इस समय चेहरे पर अच्छी क्वालिटी की नाइट क्रीम लगाना भी बहुत जरूरी है। रात के समय क्रीम लगाकर सोने से त्वचा को पूरा पोषण मिलता है।
- सर्दियों में प्यास कम लगती है। इसका मतलब ये नहीं कि शरीर की पानी की जरूरत गर्मियों की अपेक्षा कम हो जाती है। पानी की कमी से त्वचा सूखने लगती है और जगह-जगह उसमें दरारें पड़ने लगती हैं। इससे बचने के लिए सूप व गर्म पेय के साथ-साथ पानी भी भरपूर मात्रा में पिएं।
- इस मौसम में धूप में निकलना भी जरूरी है, ताकि शरीर विटामिन-डी अवशोषित कर सके। धूप में जाने से पहले एसपीएफ वाली सनस्क्रीन चेहरे पर जरूर लगाएं। एसपीएफ झुर्रियों, मुंहासों और त्वचा के कैंसर से शरीर की रक्षा करता है। शरीर के बाकी हिस्से जैसे कि गर्दन, हाथ, पैर आदि पर सनस्क्रीन न लगाएं, ताकि वे विटामिन डी अवशोषित कर सकें।
- एक्सरसाइज भी जरूरी है। इससे मांसपेशियों का लचीलापन बरकरार रहता है और गर्माहट आती है, जिससे शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है।
- साबुन का उपयोग कम से कम किया जाए।
- मलाई में चुटकी भर हल्दी व एक-दो बूंदें नींबू की मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें व चेहरे पर लगाएं।
- नारियल व जैतून के तेल की मालिश करने से त्वचा सामान्य बनी रहेगी व खुश्की दूर हो जाएगी।
- सर्दी के मौसम में चेहरा कांतिहीन हो जाता है। अतः सूखी ब्रेड के किनारे तोड़कर दूध में रात को भिगो दें। प्रातः इसमें शहद मिलाकर चेहरे पर मलें। दो-चार दिन के नियमित प्रयोग करने से चेहरे की कांति लौट आएगी।
- पपीते के छिलकों को सुखाकर अच्छी तरह पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में ग्लिसरीन मिलाकर चेहरे पर मलें व 15-20 मिनट के बाद गुनगुने पानी से धो लें। शुष्कता दूर हो जाएगी।
- भोजन में विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक रखें। गाजर, टमाटर, मौसमी, हरी सब्जियां, सलाद, दूध व मक्खन आदि ज्यादा खाएं। विटामिन 'ए' में किसी भी प्रकार की खुश्की व खुश्की से होने वाली जलन को दूर करने की शक्ति होती है।
- ग्लिसरीन में नींबू व गुलाब जल मिलाकर मिश्रण तैयार कर लें व रात को सोने से पहले चेहरे पर मलें। त्वचा मखमली-सी लगेगी।
- ठण्डी हवाओं के कारण चेहरे की त्वचा में ढीलापन आ जाता है। अण्डे के सफेद भाग में हल्दी, शहद व मुल्तानी मिट्टी मिलाकर पेस्ट बना लें व चेहरे पर लगाएं तथा सूख जाने के पश्चात् पानी से धोकर, तौलिए से अच्छी तरह पोंछ लें। त्वचा में कसाव आ जाएगा।

जीएं भी तो कैसे...???

कोसिनोक जैन

- मैंने तीस दिन काम किया ◆ तनख्वाह ली – टैक्स दिया। ◆ मोबाइल खरीदा – टैक्स दिया। ◆ रिचार्ज किया – टैक्स दिया। ◆ डेटा लिया – टैक्स दिया। ◆ बिजली ली – टैक्स दिया। ◆ घर लिया – टैक्स दिया। ◆ टीवी, फ्रिज आदि लिए – टैक्स दिया ◆ कार ली – टैक्स दिया। ◆ पेट्रोल लिया – टैक्स दिया। ◆ रोड पर चला – टैक्स दिया। ◆ टोल पर फिर – टैक्स दिया। ◆ लाइसेंस बनाया – टैक्स दिया। ◆ रेस्तरां में खाया – टैक्स दिया। ◆ पार्किंग का – टैक्स दिया। ◆ पानी लिया – टैक्स दिया। ◆ राशन खरीदा – टैक्स दिया। ◆ कपड़े खरीदे – टैक्स दिया। ◆ जूते खरीदे – टैक्स दिया। ◆ किताबें ली – टैक्स दिया। ◆ दवाई ली – टैक्स दिया। ◆ गैस ली – टैक्स दिया। ◆ सैकड़ों और चीजें ली और – टैक्स दिया।
- कहीं फीस दी, कहीं बिल, कहीं ब्याज दिया, कहीं जुर्माने के नाम पर तो कहीं रिश्वत के नाम पर पैसा देना पड़ा, ये सब ड्रामे के बाद गलती से सेविंग में बचा तो फिर टैक्स दिया...। सारी उम्र काम करने के बाद कोई सोशल सिक्यूरिटी नहीं, कोई पेंशन नहीं, कोई मेडिकल सुविधा नहीं, बच्चों के लिए अच्छे स्कूल नहीं, पब्लिक ट्रांसपोर्ट नहीं, सड़कें खराब, स्ट्रीट लाईट खराब, हवा खराब, पानी खराब, फल-सब्जी जहरीली, हॉस्पिटल महंगे, हर साल महंगाई की मार, आकस्मिक खर्चे व आपदा, उसके बाद हर जगह लाइनें।
- **सारा पैसा गया कहां ?**
- करप्शन में, इलेक्शन में, अमीरों की सब्सिडी में, माल्या जैसों के भागने में, अमीरों के फर्जी दिवालिया होने में, स्विस बैंकों में, नेताओं के बंगले और कारों में, एमपी, एमएलए की पेंशन और वेतन में, आखिर कब तक हमारे देशवासी यूं ही घिसटती जिन्दगी जीते रहेंगे ?

Babu Lal Katariya
Proprietor

Prajesh Katariya
Director

HP GAS
SHYAM HP GAS CENTRE

HP GAS
your friendly gas

18, Hathipole, Khatik Wara,
Near Sabji Mandi,
Udaipur (Raj.)
Telephone: 0294-2413979, 2421482
Mobile: 94141 67979,
9950783379,
98294 09860

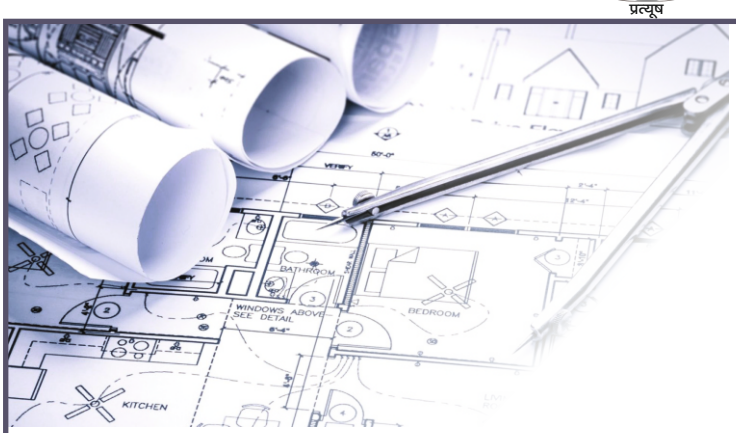

Deepak Bordia
Chartered Engineer, M.I.E., F.I.V.
Approved Valuer

BORDIA & ASSOCIATES

ARCHITECTURAL DESIGNER, PLANNER & BUILDER EXECUTE ALL KIND OF CIVIL ENGINEERING WORKS

211, Shubham Complex 11-A New Fatehpura, Near Sukhadia Circle,
Udaipur - 313 001 (Raj.) e-mail: deepakbordia@yahoo.com
Mob.: 94141-65465, Ph.: 2419465 (O), 2524202 (R)

क्या कारण है कि दादी नानी अभी तक स्वस्थ हैं जबकि हम जल्द ही रोगों की चपेट में आ जाते हैं। पहले लोग मिट्टी, चांदी व तांबे के बर्तनों में खाते थे। आइए जानते हैं किस धातु के बर्तन में भोजन करने से क्या फायदा और नुकसान होता है।

बर्तन भी दूर रखते हैं बीमारियों को

वभूति सानिया

तांबा

इस बर्तन में रखा पानी पीने से व्यक्ति रोग मुक्त होता है। रक्त शुद्ध होता है, लीवर से जुड़ी समस्या दूर होती है। तांबे का पानी शरीर के विषैले तत्वों को खत्म करता है। इनमें दूध नहीं पीना चाहिए।

पीतल

इसमें भोजन पकाने और खाने से कृमि रोग, कफ व वायुदोष नहीं होता। इसमें खाना बनाने से केवल सात प्रतिशत पोषक तत्व नष्ट होते हैं।

मिट्टी

इनमें ऐसे पोषक तत्व मिलते हैं जो हर बीमारी को शरीर से दूर रखते हैं। इसलिए इसमें पौष्टिक और स्वादिष्ट खाना बनाने के लिए धीरे-धीरे पकाना चाहिए। समय लगता है मगर सेहत के लिए अच्छा होता है। यह दूध व दूध से बने उत्पादों के लिए सबसे उपयुक्त हैं। इसमें पकाने से सौ प्रतिशत पोषक तत्व मिलते हैं व अलग स्वाद आता है।

चांदी

शरीर को आंतरिक ठंडक देती है। दिमाग व आंखों की रोशनी तेज होती है। पित्त दोष, कफ, वायुदोष नियंत्रित रखता है।

स्टील

बर्तनों में गर्म करने पर कोई क्रिया नहीं होती, इसलिए इनसे शरीर को न फायदा होता है न नुकसान।

एल्युमिनियम

यह बॉक्साइट का बना होता है। इसमें खाने से शरीर को सिर्फ नुकसान ही होता है। यह आयरन व कैल्शियम को सोखता है। इससे हड्डियां कमजोर होती हैं। मानसिक बीमारियां होती हैं। लीवर व नर्वस सिस्टम को क्षति पहुंचती हैं। साथ ही किडनी फेल होना, टीबी, अस्थमा, दमा, शुगर जैसी गंभीर बीमारियां होती हैं। इस कुकर से खाना बनाने में 87 प्रतिशत पोषक तत्व खत्म हो जाते हैं।

लोहा

इसमें बना भोजन शक्ति बढ़ाता है। लोहा तत्व शरीर में जरूरी पोषक तत्वों को खत्म करता है। सूजन और पीलापन नहीं होता। लेकिन इससे बुद्धि कम होती हैं। इसमें दूध पीना अच्छा है।

स्त्रियों के सोलह शृंगार में बिछिया का महत्व

संतोष बाबा

स्त्रियों के सोलह शृंगार में बिछिया का अत्यंत महत्व है। बिछिया पैर के अंगूठे के बगल की अंगुलियों में पहनी जाती है। हमारे ऋषि-मुनियों ने गहन शोध से हमारी संस्कृति और सभ्यता की नींव रखी है, परंतु वर्तमान चकाचौंध से भरे जीवन में हम जिस संस्कृति को भूल रहे हैं उससे हम सभी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक परेशानियों को बुलावा दे रहे हैं। सनातन संस्कृति में खाने से लेकर वस्त्र पहनने तक के शारीरिक व मानसिक प्रभाव का वर्णन है। जिसका आज विज्ञान शोध कर रहा है। विश्व की सबसे बड़ी शोध संस्था नासा जो आज शोध से प्राप्त कर रही है, वह हजारों वर्ष पहले हमारे ऋषि-मुनियों ने वेद पुराणों में लिख डाला। सोलह शृंगार का महिलाओं के जीवन में मन व मस्तिष्क से अटूट संबंध है। आज हम बात कर रहे है बिछिया की। बिछिया का महिलाओं के गर्भास्थ से गहरा संबंध है।

हिन्दू हो या मुसलमान दोनों में ही विवाह के बाद महिलाओं में बिछिया पहनने का रिवाज है। कई लोग इसे परम्परा या विवाह का प्रतीक चिह्न मानते हैं पर इसके पीछे उनके वैज्ञानिक कारण हैं। बिछिया का महिलाओं के गर्भास्थ से अटूट संबंध है। शास्त्रों में लिखा है दोनों पैरों में चांदी की बिछिया पहनने से महिलाओं का मासिक चक्र निश्चित हो जाता है। इससे महिलाओं को गर्भधारण करने में आसानी होती है। चांदी ठंडी होती है व अनेक तरंगों को खींचती है, जिससे महिलाएं तरोताजा महसूस करती हैं। थकान कम होती है। विज्ञान ने बताया है पैर के अंगूठे की तरफ से दूसरी अंगुली में एक विशेष नस होती है, जो गर्भास्थ से जुड़ी होती हैं गर्भास्थ को नियंत्रित करती है और रक्तचाप को संतुलित कर स्वस्थ रखती है। बिछिया के दबाव से रक्तचाप नियंत्रित होकर गर्भस्थ तक सही मात्रा में पहुंचता है। बिछिया अपने प्रभाव से महिलाओं के तनाव को कम करती है और प्रजनन अंग को भी स्वस्थ रखने में मदद करती है।

Happy New Year
Lalit Sahlot
Director
PERFECT PLANNER

Acrhitectural Consultant
❖ Drawings
❖ Super Vision
❖ Design
❖ Vastu
❖ 3D View

77-Chetak Circle, Opp. HDFC Bank, Udaipur
Ph. : 0294-2429184, Mob. : 94142 39001

Siddharth Singhvi
+91-99289 10551

P.B QUARRIES

MUMAL GROUP

Galaxy EXPORTS

Quarry, Marble, Granite, Quartzite

Mumal Marbles Pvt. Ltd.

Quarry Owner of Forest Green, Blue Fanatay, Arctic Quartz, Ruby Red & Antico Bianco

N.H. 8, Village Amberi, Udaipur, Rajasthan (Raj.) India Resi: +91-294-2451180-81-82
Email: singhvi7@gmail.com sales@mumalmarble.com
Web: www.mumalmarble.com www.galaxyexportsudr.com
Wechat id: Siddarthgalaxy

सूर्योदय: विस्मयकारी घटना

पंच विकारों की मनोसंवेदीय स्थिति जब-जब भी असंतुलित हुई है-भीषण युद्ध हुए हैं, रक्तपात और विनाश के द्वार खुले हैं, निर्दोषों के कत्ल आज भी साक्षी हैं-काम, क्रोध, मद, मोह के सार्वजनिक प्रभाव में कभी धर्म तो कभी सत्ता, तो कभी कामासिक्त अवस्था को संतुलित व नियंत्रित करने के लिए ही ऋषियों, मुनियों, संतों ने अपने जीवन को सूर्य की ओर मोड़ एवं अलभ्य सत्य प्रस्तुत करते हुए जन-मन को जगाया।

निष्ठा शर्मा

उत्तरायण में सूर्य का पथ प्रशस्त हो रहा है। ऊर्जाधिपति की कृपा से दिन बड़े होने लगेंगे। पृथ्वी पर ऊर्जा का प्रसरण दक्षिणायान के क्षीण प्रभाव से मुक्त होकर बढ़ने लगेगा। स्पष्ट है-प्राणी मात्र को अधिक मात्रा में ही नहीं अधिक समय तक ऊर्जा प्राप्त होगी। सूर्य से ऊर्जा प्राप्ति के तीन साधन हैं-1. चेतना पूर्वक ग्रहण 2. उद्देश्य आधारित 3. अनैच्छिक (नि:प्रयास) नि:प्रयास वह स्थिति है जिसमें समग्र सृष्टि सूर्य से प्रकाश, उष्मा, ऋतु परिवर्तन एवं अन्याय तत्वों पर प्रभाव से रासायनिक परिवर्तन के द्वारा ऊर्जा का प्रकृति में विचरण एवं प्रकृति से प्राणी पर प्रभाव होता है। यही वह प्रभाव है जिससे व्यक्ति आन्तरिक एवं बाह्य अंगों की शक्ति क्षमता को बनाए रखने में सक्षम है। जब वह प्रभाव अनायास ही चलता है तो अत्यंत साधारण होता है।

सौद्देश्य संग्रहण में व्यक्ति के द्वारा ग्राता को उद्देश्य के बाद छोड़ दिया जाता है। इसे काम्य/इच्छा पूर्ति तक ही संयोजित रखा जाता है।

समग्र जीवन को इहिलौकिक एवं पारलौकिक प्रभावों से मुक्त कर बंधन मुक्त होना, क्रिया के अन्तर्गत सचेतन प्रयास उत्कृष्ट हैं। सूर्य ऊर्जा के प्रभाव को पवित्र ऋग्वेद में चौदह सूक्त समर्पित कर दर्शाया गया है कि सूर्य ही समस्त स्थावर जंगम की आत्मा है।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुसष्च

अति सुविधा की मानसिकता ने व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और मनोसंवेदीय दृष्टि से रुग्ण कर दिया है। परिणाम व्यक्ति प्रकृति से कट गया। आज व्यक्ति दिन का निकलना तो जानता है, परन्तु सूर्योदय का उसे ज्ञान नहीं है। सूर्योदय प्रतिदिन घटित होने वाली एक महान विस्मयकारी घटना है। जो प्रकृति में निहित शून्य एक्यूरेसी (सहीपन) को दर्शाती है। नवग्रह, बारह राशियां, सत्ताइस नक्षत्र सभी तो निश्चित दूरी बनाए सूर्य के चतु दिक घूम रहे हैं।

शून्य का भी अन्तर ब्रह्माण्ड में उथल-पुथल मचा सकता है। आश्चर्य है-सूर्य निकले और हम उसके साक्षी भी न हों? हम इतने कितने व्यस्त हैं कि इस मिनट सूर्य के लिए भी नहीं निकाल सकते। जिसकी आयु की ऊर्जा अनन्तकाल तक यथावत है उसे मरणधर्मा व्यक्ति इसलिए नहीं देख रहा है कि वह व्यस्त है या उसकी अपनी आदत है। 60-70 वर्ष जीने वाला जिसमें ठीक-ठाक उम्र तो 40 वर्ष ही है-बालपन और बुढ़ापा छोड़ दें तो। अपने बचाव में सैंकड़ों तर्क देने वाला वह जानता है कि सृष्टि का प्राण ही सूर्य है। समस्या के मूल में है-युगों से निर्मित अहं और एषणाएं-ज्ञान, ध्यान, योग, संयम, साधना, जप, तप, व्रत इन सभी का अभ्युदय सूर्य में है। सूर्य साक्षात् का अर्थ है-त्रिदेवों की क्षमता का एक साथ दर्शन होना। उत्तरायण में ऊर्जा का प्रवाह इतना सुलभ है कि बिना अधिक प्रयत्न के सह स्वास्थ्य की प्राप्ति आनंदानुभूति। व्यक्ति का नाभि प्रदेश सूर्य रूपा है (अग्नि तत्व)। देह के दाहिने पार्श्व में पिंगला (सूर्य नाड़ी) एवं वाम में चन्द्र प्रधान इडा है। सूर्योपनिषद् में सूर्य को 'सर्व देवमयो रवि: कहा गया है।

पुण्य प्राप्ति और दान का पर्व

प्रकृति के आभार का महापर्व

शिखरचंद जैन

मकर संक्रांति पर आकाश में रंग-बिरंगी पतंगों का उड़ना और लगभग हर घर की छत से 'वो काटा' की जोशीली आवाज़ आना देश के लगभग हर हिंदीभाषी क्षेत्र की एक खास पहचान है। छतों पर लज़ीज़ पकवान के साथ म्यूजिक सिस्टम पर अपने पसंदीदा गानों पर थिरकते हुए बच्चे-बूढ़ों और युवक-युवतियों को पतंग उड़ाते या उड़ते देख मस्त हो जाने और घर की बुजुर्ग महिलाओं द्वारा सुबह-सवेरे स्नान करके दान के उपक्रम करने की क्या वजह है, यह सवाल कभी न कभी आपके दिमाग में जरूर आया होगा।

पतंगबाजी प्रतीक है सक्रियता का

संक्रांति का शब्दिक अर्थ है संचार या गति। इस त्योहार का दार्शनिक पहलू यह है कि सर्दियों में आलस्य में जकड़ा शरीर जरा गति पकड़ ले, इसके लिए कुछ भाग-दौड़, जरा हल्ला-गुल्ला और मौज-मस्ती हो जाए। सूर्य की गुनगुनी धूप में पतंग उड़ाते वक्त अच्छी-खासी दौड़-भाग, मौज-मस्ती और शोरगुल हो जाता है। खान-पान भी हो जाता है और परिजनों के साथ हंसी-ठट्ठा भी हो जाता है। अगर शरीर में गति न रहे, यह चलायमान न रहे तो एक प्रकार से हम निर्जीव ही हो जाएं। संभवत: इस जड़ता को खत्म करने के लिए ही इस अवसर पर पतंग उड़ाने का रिवाज़ हमारी संस्कृति में जुड़ गया। यह प्रकृति के प्रति हमारे आभार का भी महापर्व है।

सूरज के सान्निध्य का दिन

हमारी मान्यताओं और परम्पराओं के वैज्ञानिक कारण होते हैं। जब हम छत या मैदान में खड़े होकर खुले आसमान के नीचे पतंग उड़ाते हैं तो सूर्य की किरणें सीधे हम पर पड़ती हैं। संक्रांति पर जब सूर्य एक गोलार्द्ध से दूसरे गोलार्द्ध की यात्रा कर रहा होता है तो इस दिन इसकी किरणों का सकारात्मक औषधीय प्रभाव हमारी सेहत पर पड़ता है। सर्दियों में जब हम अक्सर सर्दी-जुकाम से पीड़ित रहते हैं, ऐसे में इन किरणों से हमारी सेहत पर अच्छा असर होता है।

कुछ अलग खाने का पर्व

मकर संक्रांति के अवसर पर हम आम दिनों से हटकर कुछ अलग खाते हैं। वर्ष के दूसरे दिनों में तिल और गुड़ से बने व्यंजनों की पूछ-परख नहीं होती लेकिन इन दिनों मूंगफली और गुड़ से बनी चिक्की, तिलकुट्टा और तिलगुड़ बनाकर खाया जाता है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, दिल्ली सहित कई राज्यों में दाल-चावल की खिचड़ी, तिल-गुड़ से बनी गजक, रेवड़ी आदि खाने का रिवाज़ है। पश्चिम बंगाल में चावल के आटे और खजूर गुड़ से बने पीठे, पुली और पातीषाप्ता मिठाइयां खाई-खिलाई जाती हैं। कई राज्यों में इस अवसर पर घेवर और फीणी भी खाते हैं और बहन-बेटियों के यहां भेजते हैं।

हिन्दू संस्कृति में इस दिन दान करने का रिवाज़ और महत्व है। गरीबों, ब्राह्मणों आदि को अपनी आर्थिक शक्ति के मुताबिक तिल-गुड़ से बना मीठा, चावल-दाल, चिवड़ा, कपड़े, नगदी आदि दान किया जाता है। उत्तरप्रदेश और पश्चिम बंगाल में इस दिन गंगा स्नान करने का भी महत्व है। माना जाता है कि इस दिन गंगा या किसी पवित्र नदी में डुबकी लगाने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। पं. बंगाल के 24 परगना जिले के गंगासागर (गंगा का सागर से मिलन) में इस दिन देश के लाखों लोग स्नान करते हैं।

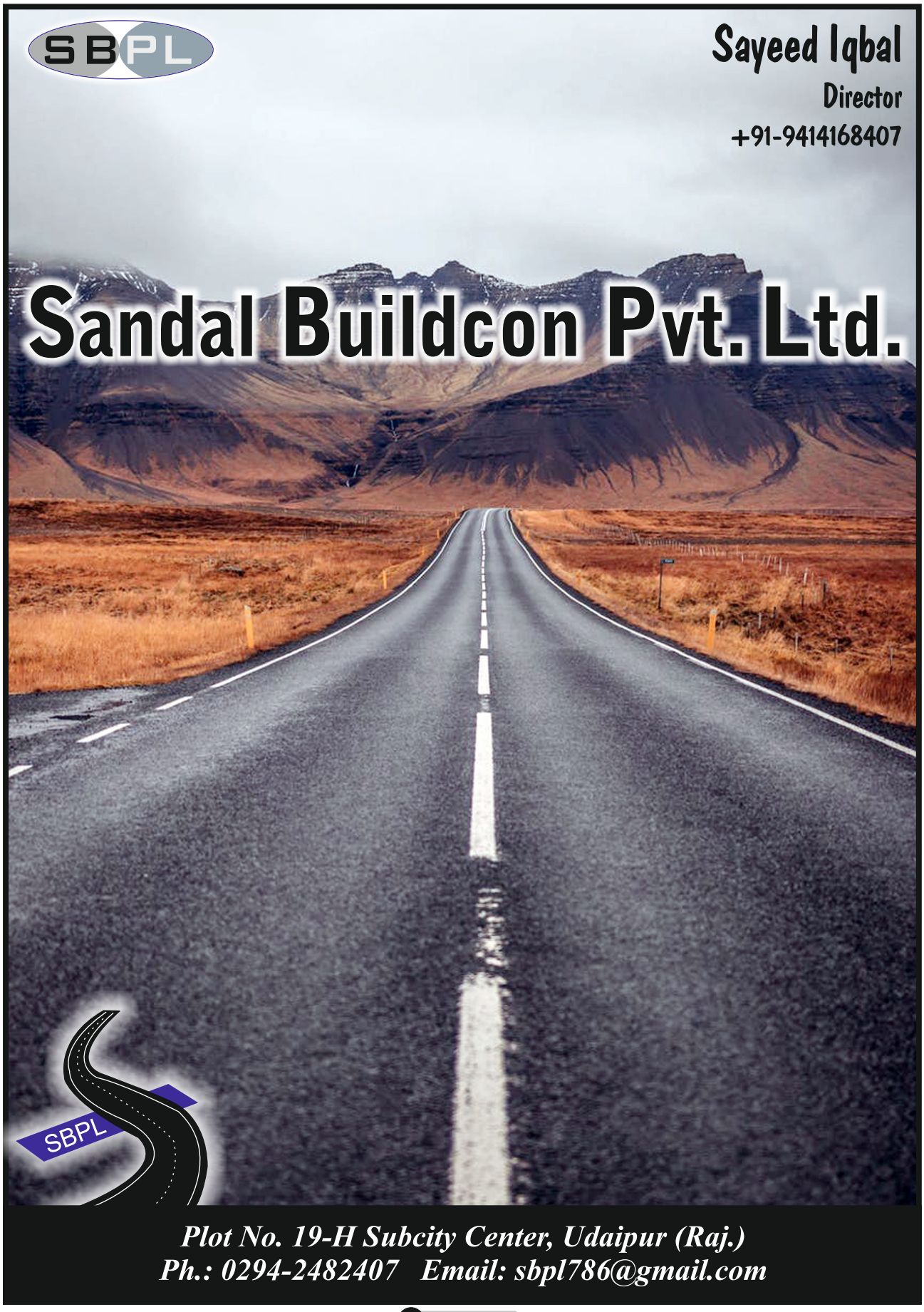
SBPL
Sayeed Iqbal
Director
+91-9414168407
Sandal Buildcon Pvt. Ltd.
SBPL
Plot No. 19-H Subcity Center, Udaipur (Raj.)
Ph.: 0294-2482407 Email: sbpl786@gmail.com

कभी दिल्ली की सड़कों पर तांगा चलाते थे

जीरो से बने हीरोः धर्मपाल गुलाटी

पाकिस्तान के सियालकोट में पैदा होने वाले धर्मपाल गुलाटी का पिछले दिनों निधन हो गया। अपने जीवन के शुरूआती कई साल बेहद गरीबी में बिताए थे। उनके लिए एमडीएच मसालों के मालिक और एफएमसीजी सेक्टर में सबसे अधिक वेतन लेने वाले सीईओ बनने का सफर आसान नहीं रहा। महाशय धर्मपाल का पुश्तैनी काम भले ही मसालों का कारोबार रहा हो, लेकिन दिल्ली आने पर मसाला कारोबार शुरू करने से पहले उन्होंने गुड़ का व्यापार शुरु किया था।

महाशय धर्मपाल ने 1933 में पांचवी कक्षा की पढ़ाई बीच में छोड़ दी थी। भारत आने के समय उनके पास केवल 1500 रुपए ही बचे थे, जिससे उन्होंने 650 रुपए में घोड़ा और तांगा खरीद लिया। वह लोगों को तांगे पर बैठाकर कनॉट प्लेट से करोलबाग तक छोड़ करते

महाशय दी हट्टी नाम

महाशय दी हट्टी (एमडीएच) नाम के पीछे भी एक वजह है। धर्मपाल गुलाटी कहते थे कि पाकिस्तान में सज्जन व सामाजिक व्यक्तियों को महाशय कहा जाता है और उनके पिता को भी वहां महाशय कहा जाता था। ऐसे में लोग उन्हें भी महाशय कहने लगे और जब खारी बावली में उन्होंने दुकान खोली, तो महाशय की हट्टी शुरु हुई। इसके बाद करोलबाग, कीर्तिनगर में खुली दुकान व फैक्ट्री महाशय दी हट्टी के नाम से शुरु की गई।

तांगा छोड़ने के बाद सिर पर गुड़ बेचा करते थे

महाशय धर्मपाल गुलाटी के सबसे पुराने मित्रों में शुमार भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय चैयरमेन 89 वर्षीय मनोहरलाल कुमार बताते है कि जब उनकी धर्मपाल से मुलाकात हुई थी, वह कुतुब रोड चौक से नई दिल्ली में तांगा चलाते थे। इसके बाद जब तांगा चलाना छोड़ा तो हम दोनों ने गाजियाबाद से सिर पर गुड़ लाकर खारी बावली में बेचना शुरू कर दिया। गुलाटी के कारोबारी सहयोगी व भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष प्रेम अरोड़ा के मुताबिक खारी बावली के कटरा मैदान में खोली दुकान से उन्होंने मसालों के कारोबार की शुरूआत की।

सफाई की तीन संतानें स्वास्थ्य, सुव्यवस्था और सौंदर्य

भारत की संस्कृति में स्वच्छता को दैवीय गुण बताया है। जब हम बाहरी सफाई से जुड़ते हैं, तब दो बातों पर टिक जाते हैं – सौंदर्य और वस्तु की अवधि बढ़ाना। बाहरी साफ-सफाई इन दो बातों को तो पूरा कर देती है, लेकिन यदि उसी समय भीतर की सफाई न की गई तो बीमारी के खतरे बने ही रहेंगे। भारत में देव स्थानों को तबीयत से गंदा किया और रखा जाता है। लोग स्नान करके, शरीर साफ करके देव स्थान में प्रवेश करना चाहते हैं, लेकिन वहां के ढांचे को गंदा करने में कसर नहीं छोड़ते। गोकुल की गलियों को कोई आज देखे तो श्रीकृष्ण कथा से मिलने वाला आनंद दुःख में बदल जाता है। शरीर का प्रत्येक अंग कलपुर्जे की तरह हैं और भोजन की पाचन क्रिया के कारण ये अंग सक्रिय होकर मैले भी होते रहते हैं। हम बाहर से शरीर साफ कर लेते हैं, पर भीतर इन अंगों की सफाई के प्रति लापरवाह रहते हैं। हाथ धोकर खाना खाते हैं अच्छी बात है, पर भीतर आंतें धुली कि नहीं, इस बात का ख्याल नहीं रखते। अपने घरों का साफ रखते हैं और सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई को लेकर लापरवाह रहते हैं। सफाई की तीन संतानें हैं – स्वास्थ्य, सुव्यवस्था और सौंदर्य। गंदगी आई और हम इन तीनों से हाथ धो बैठते हैं। घरों में पाई जाने वाली मक्खी इंसान के अंदर तीस तरह की बीमारियां फैलाती है। सफाई के मामले में यह दोहरी आदत हमारी पूजा-पाठ में भी उतर जाती है। हम रामनाम की चादर ओढ़ते हैं और उस चादर के नीचे जमाने भर की गंदगी ढंक लेते हैं। इसलिए अपने देह स्थान और देव स्थान समान रूप से सतत साफ रखें। ईश्वर को साफ-सफाई संतान की तरह प्रिय है।

साल के पहले त्योहार यानी संक्रांति के मौके पर तिल का ख़ास महत्व होता है। क्योंकि इस दिन तिल के व्यंजन विशेष रूप से बनाए जाते हैं। इस दिन तिल से बने लड्डू, बर्फी, गजक जैसे कई व्यंजन बनाए और खाए जाते हैं। पारंपरिक व्यंजनों में थोड़ा सा बदलाव कर आप तिल की कई नई रेसिपीज तैयार कर सकती हैं।

संक्रांति तो तिल से ही मनेगी

– रेणु शर्मा

तिल चॉको नट्स

सामग्री : भुने तिल-100 ग्राम, डार्क चॉकलेट-100 ग्राम, लाइट चॉकलेट-100 ग्राम, एक शीट बटर पेपर, काजू-50 ग्राम, बादाम-50 ग्राम, अखरोट गिरी-50 ग्राम।

विधि : दोनों चॉकलेट्स को माइक्रोवेव ओवन में एक से दो मिनट तक रखकर पिघलाएं। अच्छी तरह चलाकर एकसार कर लें। अब सभी गिरियों को इसमें डुबोकर तिल में लपेटकर बटर पेपर पर रखती जाएं। ठंडा होने पर बटर पेपर से निकालकर एअरटाइट डिब्बे में भरकर रखें। (माइक्रोवेव न होने पर डबल बॉयलर पद्धति अपनाएं। इसके लिए एक बड़ी कड़ाही में पानी डालकर दूसरे छोटे बर्तन में चॉकलेट डालें और उसे कड़ाही के गर्म पानी में रखकर चॉकलेट पिघलने तक चलाती रहें।)

तिल का शाही मिक्सचर

सामग्री : 100 ग्राम भूने तिल, 50 ग्राम दरदरी मिश्री, 50 ग्राम काजू कतरन, 50 ग्राम किशमिश, 25 ग्राम पिस्ता कतरन, 5 ग्राम गुलाब की सूखी पंखुड़िया, 25-30 केसर धागे (मसले हुए)।

विधि : तिल को दरदरा पीस कर इसमें मिश्री, काजू कतरन, किशमिश, पिस्ता कतरन, केसर व गुलाब की सूखी पंखुड़ियां अच्छी तरह मिला लें। तिल का शाही मिक्सचर तैयार है।

तिल पनीर टिक्का

सामग्री : पनीर-200 ग्राम, सफेद तिल-एक कप, अदरक-लहसुन व हरी मिर्च का पेस्ट-दो छोटे चम्मच, हंग कर्ड (बंधा दही)-आधा कप, काजू पेस्ट-दो बड़े चम्मच, तिल पेस्ट-दो बड़े चम्मच, चाट मसाला-एक छोटा चम्मच, तेल या मक्खन-सेकने के लिए, नमक-स्वादानुसार।

विधि : सबसे पहले पनीर को लम्बे टुकड़ों में काट लें। अब हंग कर्ड में अदरक-लहसुन व हरी मिर्च का पेस्ट, काजू पेस्ट, तिल पेस्ट व नमक मिलाएं। अब इसमें कटा पनीर डालकर एक से डेढ़ घंटे के लिए मैरीनेट होने दें। अब इस मैरीनेट पनीर को सूखे तिलों से कवर कर नॉनस्टिक तवे पर हल्का-हल्का तेल या मक्खन लगाकर उलट-पलट करते हुए चारों तरफ से सेकें। चाट मसाला बुरकें। तैयार तिल पनीर टिक्का को हरी चटनी व प्याज के लच्छों के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

तिल कटलेट

सामग्री : सफेद तिल - एक कप, आलू-3 उबले, काजू टुकड़ी-दो बड़े चम्मच, ब्रेड-3 स्लाइस, अदरक व हरी मिर्च बारीक कटी-एक-एक छोटा चम्मच, शाही जीरा-आधा छोटा चम्मच, चाट मसाला-एक छोटा चम्मच, तेल-तलने के लिए, नमक व लाल मिर्च-स्वादानुसार।

विधि : सबसे पहले तिल की आधी मात्रा को फूल जाने तक सेकें व कूटकर दरदरा कर लें। उबले आलू को छीलकर, मैश कर इसमें कुटे तिल, बारीक कतरी अदरक, हरी मिर्च, शाही जीरा, नमक, चाट मसाला व पानी में भीगी और निचुड़ी ब्रेड को डालकर अच्छी तरह मिलाएं। तैयार मिश्रण से मनचाहे आकार में कटलेट बनाकर इन्हें शेष बचे कच्चे तिलों से कवर कर गर्म तेल में सुनहरा होने तक तलें। तैयार कटलेट को सॉस या चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

तिल पोटली

सामग्री : मैदा-एक कप, खोया-आधा कप, सफेद तिल-आधा कप, पिसी चीनी-आधा कप, नारियल बूरा-दो छोटे चम्मच, पिस्ता कतरन-दो छोटे चम्मच, इलायची पाउडर-आधा छोटा चम्मच, तेल-मोयन व तलने के लिए।

विधि : सबसे पहले भरावन बनाने के लिए तिल को सेक कर दरदरा करें। अब खोये को कड़ाही में डालकर हल्का सेकें और इसमें कुटे तिल, नारियल बूरा, पिस्ता कतरन, इलायची पाउडर व पिसी चीनी मिलाकर गैस बंद कर दें। अब मैदे में दो छोटे चम्मच पिसी चीनी और दो छोटे चम्मच तेल का मोयन मिलाकर पानी की सहायता से थोड़ा सख्त गूंथ लें। अब इस गुंथे मैदे से छोटी लोई बना कर इससे गोल पतली रोटी बेलें। इसके बीच में थोड़ा-सा तिल वाला मिश्रण भरें और किनारों को लपेटते हुए बीच में लाएं और इन्हें दबाकर पोटली का रूप दें। इसी तरह सारी पोटलियां बनाकर इन्हें गर्म तेल में सुनहरा होने तक तल कर सर्व करें।

अनमोल विचार

- दो पल की जिंदगी के दो नियम- निखरों फूलों की तरह और बिखरो खुशबू की तरह।
- किसी को प्रेम देना सबसे बड़ा उपहार है और किसी का प्रेम पाना सबसे बड़ा सम्मान है।
- श्रद्धा ज्ञान देती है, नम्रता मान देती है, योग्यता स्थान देती है और ये तीनों मिल जाए तो व्यक्ति को हर जगह सम्मान देती है।
- हंसता हुआ चेहरा व्यक्तित्व की शान बढ़ाता है, जबकि हंसकर किया हुआ कार्य और व्यवहार हमारी पहचान बढ़ाता है।
- किसी के लिए समर्पण करना मुश्किल नहीं है, मुश्किल है उस व्यक्ति को ढूंढना जो आपके समर्पण की कद्र करे।
- वक्त की कीमत जो पहचान लेता है, वही मंजिल को पाता है क्योंकि गुजरा हुआ वक्त कभी लौटकर नहीं आता है।

- गायत्री पटेल

Virender Kabra
Director
+ 91 93525 00759

SATISFACTION 100% GUARANTEE

Rakesh Kabra
Director
+ 91 94621 68691

JAI SHREE TRADERS

Authorised Distributor

• HIKOKI Power Tools • Garg Machine • Keapoxy • Lethal Rtu/TC • Araldite Adhesive • FOSROC (Cons. Solu.) • Bond Tite Adhesive • AKEMI (Stone Chemical) • Lapox (Epoxi Ch.) • MRF Special Coatings • Abro Masking Tape • Dow Silicon • MRF Vapocure Paints • Reliance RecronTM 3S • Grindwell Norton Ltd

34, Ashwini Bazar, Udaipur - 313 001 (Raj.) Ph.: 0294-2415387 (O), 2484898 (R)
E-mail: jaishreetrader@gmail.com Website: www.jaishreetrader.nowfloats.com

आज तक किसी ने कल को नहीं देखा है। जिसने भी देखा है आज को ही देखा है या इतिहास को देखा है। जब आज को ही जीना है सुंदर तरीके से जीयें। जिंदगी का एक-एक दिन अनमोल है। ये किसी भी कीमत में वापस नहीं मिलेगा।

सफल जीवन का रहस्य

डॉ. सम्पत सेठी

जर्मनी में एक वैज्ञानिक का साक्षात्कार हो रहा था। उनसे पूछा गया आप गरीब परिवार में पैदा हुए। आज इतने ऊंचे पद पर आसीन हो गये है इसका कारण क्या है? आपके गुरु कौन है? वैज्ञानिक हंसने लगे, हंसते-हंसते उन्होंने बहुत मार्मिक बातें बता दी। उनका पहला जवाब था मैं अपने कमरे की नियमित सफाई करता था और आज भी सफाई करता हूं। मेरे कमरे को आप निरीक्षण कर सकते हैं कहीं पर भी जाला, गंदगी, कबाड़ अव्यवस्थित वस्तुएं नहीं मिलेगी। दूसरा कारण मैं रोज शेविंग करता हूं। आइने में अपनी शक्ल का दर्शन करता हूं। तीसरा कारण मेरे वस्त्र कभी भी फटे हुए एवं गंदे नहीं मिलेंगे। आज का काम कल पर नहीं छोड़ता। इतिहास पढ़ता हूं भविष्य की चिंता नहीं करता। वर्तमान में जीता हूं। परमात्मा ने जो मुझे सौगात भेजी उसे सआनंद भोग करता हूं। मैं अपनी दिनचर्या पर अनुशासन रखता हूं। जिस निवास स्थान में मुझे हर्षोल्लास नहीं मिलता, चैन की नींद नहीं आती। उसे तुरंत त्याग देता हूं। यही मेरी सफलता का राज है। वैज्ञानिक अप्रत्यक्ष रूप से बहुत कुछ कह गए?

विद्वान वैज्ञानिक ने अपने छोटे से साक्षात्कार में सागर को गागर में भर दिया। उनके एक-एक शब्द आत्मविश्वास से लबालब थे। आपने व्यावहारिक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान, वस्तु विज्ञान, जीवन जीने की कला सभी को प्राप्त कर लिया। इनका पहला जवाब था- मैं कमरे की सफाई पहले भी करता था आज भी करता हूं। जहां गंदगी नहीं होती वहां शक्तियां, सकारात्मक ऊर्जाएं, आध्यात्मिक ऊर्जाएं आती है। उनका दूसरा जवाब था- मैं शेविंग नित्य करता हूं। पुरुष वर्ग जब शेविंग करते हैं उनके चेहरे पर एक सुंदरता की आभा आ जाती है। दर्पण में अपना अक्श देखकर मन में प्रफुलता जागृत हो जाती है। आप अपने आपको फ्रेश एवं सुंदर महसूस करेंगे। आपके अंदर आत्मशक्ति का संचार होने लगता है। तीसरा कारण कभी भी फटे एवं गंदे वस्त्र नहीं पहनता-अगर आपके वस्त्र फटे हुए हों आप अपने आप में लक्ष्मी के अभाव को महसूस करते है। शास्त्रों में ऐसा प्रमाण माना गया है-फटे वस्त्र पहनना दरिद्रता को निमंत्रण देना है। गंदे वस्त्र नकारात्मक ऊर्जाओं से भरे होते हैं। नकारात्मक ऊर्जाएं आगे बढ़ने में रूकावटें पैदा करती है। आज का काम कल पर नहीं छोड़ता। यह दोहा प्रचलन में भी है-

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में प्रलय होयगी, बहुरी करेगी कब।

वैज्ञानिक क्या कहना चाह रहे है-इंसान आज का काम कल पर छोड़कर अपने आपको चिंताओं से घेर लेता है। कल मुझे ये करना है-2। एक नई चिंता को निमंत्रण देता है। अपने सुकून को अपने से अलग कर देता है।

इतिहास पढ़ता हूँ भविष्य की चिंता नहीं करता वर्तमान में जीता हूं। धन्य है यह वैज्ञानिक जिन्होंने एक लाइन में पूरा समयसार बता दिया। जो गुजर गया वह इतिहास है वह चाहे स्वयं पर गुजरा हो या किसी और पर गुजरा हो। इतिहास से शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। कल क्या होगा? क्या हम छोटी मौत (नींद) से उठकर क्या कुछ कर पायेंगे। आज तक किसी ने कल को नहीं देखा है। जिसने भी देखा है आज को ही देखा है या इतिहास को देखा है। जब आज को ही जीना है सुंदर तरीके से जीयें। जिंदगी का एक-एक दिन अनमोल है। ये किसी भी कीमत में वापस नहीं मिलेगा। जो चीज मिलने वाली नहीं उसे व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिए। उसका सदुपयोग करना चाहिए।

मैं अपने कार्य को परमात्मा का आदेश समझकर करता हूँ और परमात्मा को समर्पित कर देता हूँ। विश्व में जितने भी अल्प बुद्धिमान हो, संसार की विपरित क्रियाएं करते हैं। मूर्खों की श्रेणी में आते हैं उनकी क्रियाओं को देखकर अपने आप को सावधान कर लेता हूं। कोई गलत क्रिया मुझसे नहीं हो ऐसा प्रयास करता हूं। जिन क्रियाओं को देखकर, सुनकर ज्ञान की प्राप्ति होती है वह मेरे गुरुवर हैं। अपनी दिनचर्या पर नियंत्रण रखता हूं। जिन्होंने स्वयं पर शासन किया विश्व उनके आधीन हो गया। आखिर में विद्वान ने सब बातों का सार कह दिया- जिस रूम या फ्लैट में निवास करना चाहते हैं अगर वास्तु अनुकूल नहीं है। सकारात्मक ऊर्जाओं से ओत-प्रोत नहीं है वहां नहीं रहना चाहिए। वास्तु के मूल सिद्धांत मानने वाले शिखर पर पहुंच पाते हैं।

खुदा ने उस कॉम की हालत न बदली,
जिसे न फक्र हो अपनी हालत बदलने का।

वैज्ञानिक के साक्षात्कार का एक-एक शब्द मोतियों से पिरोया हुआ है। इस मोती की माला को अपने जीवन में उतार लें, तो सफलता आपके कदम चूमेगी।

Khiv Singh Rajpurohit
(Managing Director)
94141-04766

BKMGPL

All Kinds of Marble and Granite Block, Slabs & Tiles

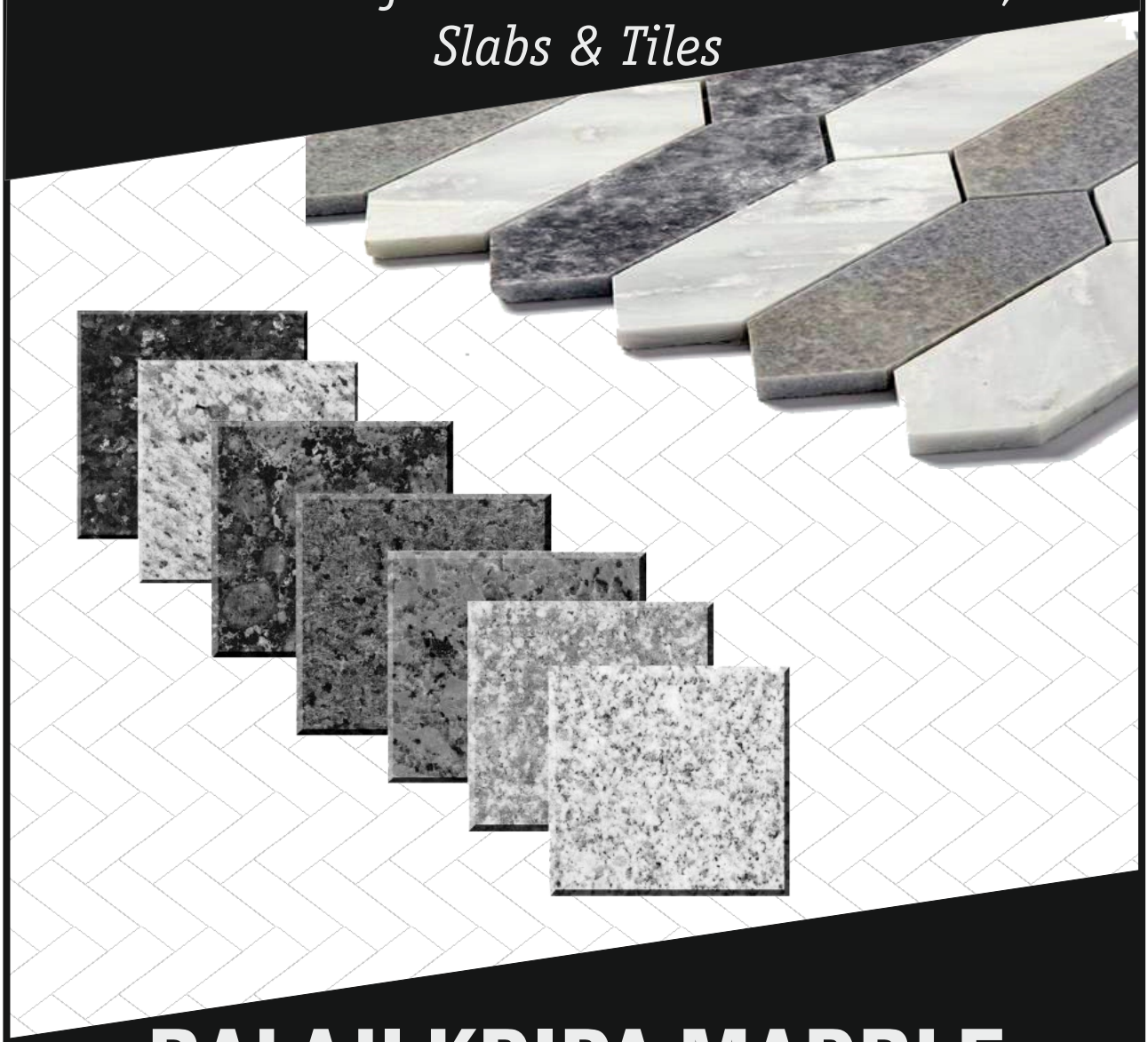

BALAJI KRIPA MARBLE & GRANITE PVT. LTD.

398-399, Sukher Industrial Area, Sukher, Udaipur (Rajasthan) India
Phone : +91-294-2442370, Fax : +91-294-2441773
e-mail: balajikripa.udr@gmail.com

CENTURYPLY®

Girish Maheshwari
Mob.: 99280-35657
99280-35658

Century Plyboards (I) Limited

Maheshwari Brothers

Brij Bhawan, 385, I-1 Road, Bhupalpura,
Near Maharashtra Bhawan, Udaipur (Raj.)
E-mail: girishm421@gmail.com

Harshit Joshi
Director
9992220895

N.D. Joshi
CMD
9414163056

shi
SYMBOL OF QUALITY

SHEETAL HOSE INDUSTRIES

Manufacturers of

All type of High & Medium Pressure Hose Assemblies

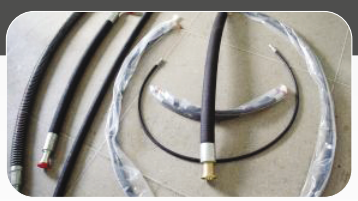

E-90-B, Mewar Industrial Area, Near Pollution Control Board, Office, Madri,
Udaipur - 313 003 (RAJ.) Tel.: 0294-2494056
E-mail: sheetalhose@gmail.com, Website: www.sheetalhose.com

कलेस रो कारो मुण्डो

जनकदुलारी जोशी

पाछला *दनां भंवर बन्ना (पोता) रे कुणी ऊपरे फुन्सी वेई गी। एक तो फुन्सी अर् पाछी जोइंट माईने व्ही। दिखे न्हानी पण दुखे घणी। आखाई हाथ माईने रातड़ (लाली) घाल दी दी। पूजा करती दादीसा चंदन लगाई दी दो। दादाजी मंदर ग्या तो वठाऊं कबूतरां री पीठ (विष्ठा) उठाई लाया। दादीसा गोर, हल्दी, आटा, तेल री लपरी (हलवा) में वा पीठ न्हाख ने फुन्सी ऊपरे तीन दन तक पट्टी कर दी दी। पण वणी फुन्सी में नमण तो तीजे दन तक ई'ज तक आई। जतरे नुवी लाड़ी, भणी पण गणी न्हीं, वींद रो जीव खाई गी। हाऊजी, होराजी ऊं मुण्डो चड़ाई राख्यो। वा ही तो गामड़ा गाम री पण हिन्दी माईने बड़-बड़ करे-''आज कल पता नहीं कुछ भी हो जाता है। डॉक्टर के पास ले जाओ, यहां पर इलाज करते-करते कुछ रोग बढ़ गया तो वो भी डाटेगा और मेरा बेटा भी रोता रहेगा।'' हाऊजी, होराजी मसक-मसक (मंद-मंद) हँसे अर् लाड़ी ने तीन दन तक टोरावता (बहलाना) रिया। तीजे दन फुन्सी फूट गी। रातड़ खतम वेई गी। भंवर बन्ना रोवता-रोवता खेलवा लाग ग्या। जदी लाड़ी रे जीव में जीव आयो। अणी लम्बी-चौड़ी वात में म्हने नगे (खबर) पड़ी के नुवी पीढ़ी भणवा-लखवा ल्यारे ई'ज न्हानी-मोटी मांदगियां ऊं कतरी डरपी थकी है। गलती नवी पीढ़ी री बी न्हीं है। मांदगियां, दवायां, डॉक्टरा रा, जांचा रा, अस्पताला रा अतरा विज्ञापन आवे के व्ही लोग नख में रोग भी वेई जावे तो मरवा तक रो होच ने भयभीत वेई जाय। आपाणा लोगां परे जतरो भरोसो वेणो छावे वणी ऊं वत्तो दूजा परे है। या तो ठीक है अणी घटना में दादा-दादी री चाल गी, वणा बी आपाणों हक पोता परे जणायो। पण वदोतर दादा-दादी अस्या बी है के म्हा म्हाणा छोरा-छोरी मोटा कर दी दा, थां थाणी जाणो। अस्यो होच अर् पल्लो झाटक दे। कारण बी है के कलेस रो कारो मुण्डो। अस्या बेटा वऊ बी है के मां-बाप केता रेवे अर् व्ही तो छोरा ने न्हाखे खांदे अर् लपके प्राइवेट हस्पताल में। अणी तरे व्ही माई-बाप रो अपमान बी करे अर् धड़ी ढिंगले पया डाक्टर ने बी खवावे। ढगला-ढगला एन्टीबायोटिक गोलियां सिरप लाई ने घर में वरे अर् घर ने हस्पताल वणाई दे। घड़ी रा कांटा परमाणे दवाई दे, मरीज ने हालवा न्हीं दे।*

लोग मांदो व्हे, लुगाई मांदी व्हे तो चौबीस घण्टा में एक दाण उठो वेई ने आपाणो काम-धंधो हम्बार आवे। टाबर बी खेलवा री जिद करे पण व्हीने विछावणा मु हालवा न्हीं दे।

म्हारी भुआ मां एक दाण दादीसा रे केई री ही ज्या वात मैं हूणी अर् वा म्हूं आपने केऊं-''भाभी, काले हांजे चरवरा चढ्या, झुरझुरी छुटी (रोम उठना, कंपकपाना) अर् चड़चड़ाई ने ताव चड़ ग्यो, म्हे तो तगारी

भर्या गऊं लिदा अर् बैठी घट्टी रे हामे, चड्यो ताव पसीनो वेई ने उतर बी ग्यो अर् तगारी भरियो आटो हाथे लाग्यो जो अलग।'' वणी रो फें-फें कर ने हंसतो चेरो आज बी म्हने आंखां हामे दिखे। दूजे दन भुआ मां म्हारे घरे बी आई ग्या। आज अस्यो कई वेतो तो घर भर रा गोदड़ा ओड़ावणा पड़ता अर् आगे कई-कई वेतो आपा सब जाणा हां।

म्हारी हमज परमाणे नुवी पीढ़ी रे होचवा रा तरीका में रहन-सहन में दाना-बूढ़ा रा आदर-अनादर में फेरबदल री वजे या हे के पयो वद ग्यो, औलादां कम वेई गी, मानगी री डरप वद गी, सहनशक्ति नी रे बराबर वेई गी। दाना-बूढ़ा रो काण कायदो राखणो भूल ग्या। वात-वात में दो पीढ़िया रो आंतरो है, अस्यो ओठो (ताना) देवा लाग ग्या।

विचार करवा री वात या है के दो-चार पीढ़ियां किस्तर ल्यारे रेवती वेगां, पीतो मारती वेगा (मन मारना), एक दूजा ने सहन करती वेगा।

खेंखार खाता ई'ज, हो-पानसो रिपिया री दवायां आवे, खरोंच लागता ई टिटनेस री हुई घोंपावे, ल्यारे-ल्यारे नुवी पीढ़ी ज्ञान दान बी देवे। ''अबे व्ही पुराणा दन न्हीं है के हल्दी-लूण री फाकी में रोग मट जावे।'' या वात दूजी है के अमेरिका री होटल में हल्दी-दूध रो एक कप पान सौ रिपिया में मले, लोग राजी वेई ने व्हो दूध पीवे अर् जाणे के सरदी-जुखाम वरा (खुल) जाएगा।

दाना-बूढ़ा होचता रेई जावे। हवा, पाणी, अन्न तो वोई'ज है, पण दन किस्तर बदल ग्या। नुवी पीढ़ी बी छोरा-छोरी जणे अर् म्होटा करे। पुराणा बी जणता और म्होटा करता। अबे अणा ने कूण हमजावे थां अंदारी ओवरी में जणता। नुवी पीढ़ी एसी, कूलर में छोरा-छोरी जणे। न्ही तो जच्चा में बाफ (ताकत) है अर न्ही टाबर में। अणा ने कूण वतावे के पाणी 'आरो' रो है, हवा एसी, कूलर री है, अनाज पेस्टिसाइड रो है।

कैसा लगा यह अंक

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

pankajkumarsharma2013@gmail.com

जो बाइडेन होंगे अमरीका के नए राष्ट्रपति

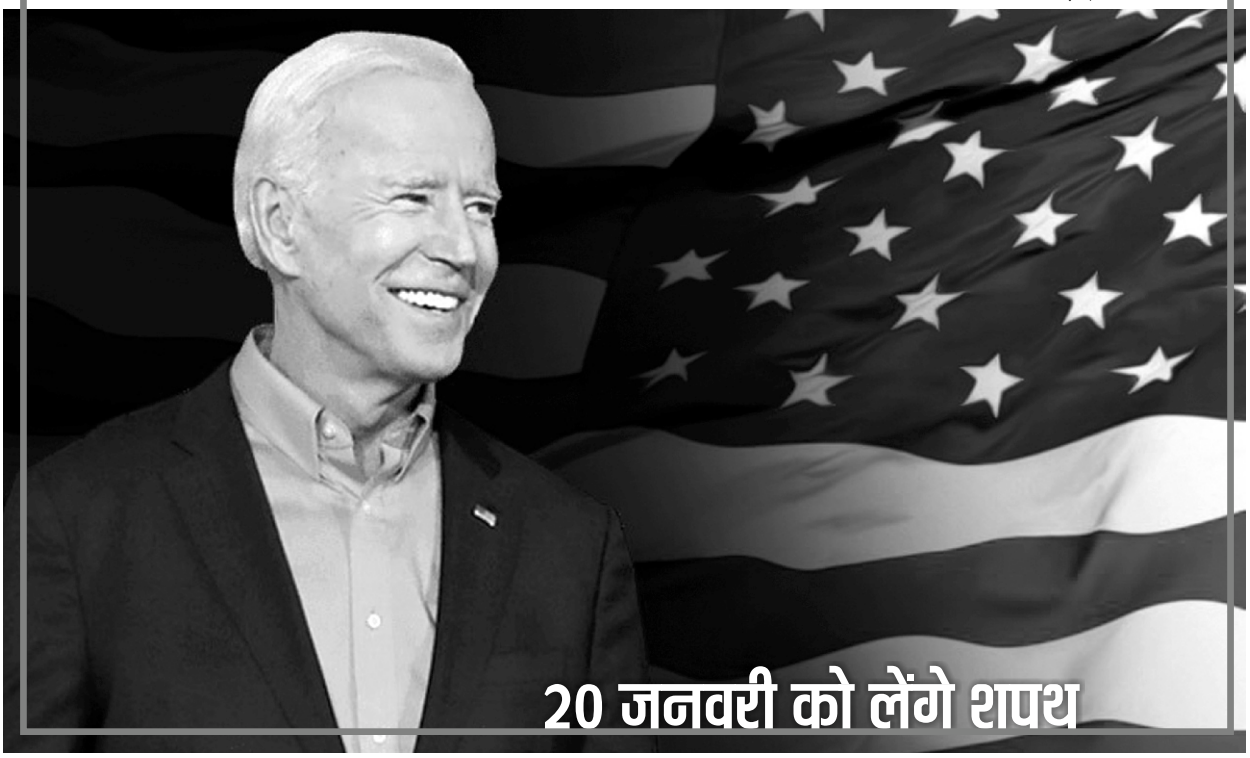

20 जनवरी को लेंगे शपथ

उमेश शर्मा

अमेरिकन डमोक्रेटिक पार्टी नेता जो बिडेन अमरीका के नए राष्ट्रपति होंगे। 77 वर्षीय बिडेन 20 जनवरी 2021 को अमरीका के 46वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे। बिडेन इससे पूर्व 2009 से 2017 तक पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव बराक ओबामा के कार्यकाल के दौरान उपराष्ट्रपति रह चुके हैं। उन्होंने 2020 के अमेरिकन प्रेसिडेन्ट के लिए हुए चुनावों में वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को हराया।

नए राष्ट्रपति सरकार गठन की तैयारियों में जुट गए हैं। वे राष्ट्रपति पद संभालते ही किस तरह से कार्य करेंगे उसकी रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। कोरोना महामारी से निपटने के लिए भी उन्होंने अपना एक प्लान तैयार कर लिया है। जिसके अन्तर्गत पद संभालने के 100 दिन के अन्दर लगभग 10 करोड़ अमरीकियों तक वैक्सीन पहुंचाई जाएगी। उन्होंने कहा कि हम 100 दिनों में बीमारी की दिशा बदल देंगे तथा लोगों की जिंदगी में अच्छा बदलाव लाएंगे। प्रभावी वैक्सीन देश की बदहाल अर्थव्यवस्था को बहाल करने में मदद करेगी। सरकार की प्राथमिकता वैक्सीन वितरण के साथ स्कूलों में बच्चों की वापसी भी करनी है। ज्ञातव्य है कि अमेरिका में अब तक 2.86 करोड़ लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 1.52 करोड़ लोग संक्रमित हो चुके हैं।

हालांकि जो बिडेन के लिए अमेरिकन राष्ट्रपति चुनाव जीतने का सफर आसान नहीं रहा। चुनाव परिणामों के दौरान ट्रम्प की ओर से धोखाधड़ी के आरोप लगाए गए।

सबसे अधिक उम्र के राष्ट्रपति

78 साल के बिडेन शपथ लेने के साथ ही इस पद पर पहुंचने वाले सबसे अधिक उम्र के नेता बन गए है। सीनेट में जाने की न्यूनतम आयु 30 साल है, जबकि बिडेन मात्र 29 साल की उम्र में ही सीनेट के चुन लिए गए थे। परन्तु शपथ लेने तक उनकी आयु 30 वर्ष हो गई थी, इस वजह से वे इस पद पर बने रहे।

व्हाईट हाउस में भारतीय अमेरिकी

अमेरिकी राजनीति में भारतीय-अमेरीकियों का हमेशा बोलबाला रहा है। नए राष्ट्रपति बिडेन ने भी अपने लम्बे समय से सहयोगी भारतीय अमेरिकी विनय रेड्डी को अपना भाषण लेखक नामित किया है। वहीं भारतीय-अमेरिकी समुदाय के एक अन्य व्यक्ति गौतम राघवन को राष्ट्रपति कर्मी कार्यालय का उपनिदेशक नामित किया गया है। राघवन पूर्व में व्हाइट हाउस में सेवा दे चुके हैं। बिडेन ने कहा कि ये अनुभवी व्यक्ति उन नीतियों को पूरा करने के लिए जुड़ रहे हैं जो हमारे देश को एक ऐसे निर्माण के रास्ते पर ले जाएंगी, जैसा पहले कभी नहीं हुआ। रेड्डी बिडेन-हैरिस चुनाव प्रचार के भी वरिष्ठ सलाहकार और भाषण लेखक थे। वहीं राघवन भारतीय-अमेरिकी सांसद प्रमिला जयपाल के चीफ ऑफ स्टाफ के रूप में सेवा दे चुके हैं।

भारतवंशी कमला हैरिस होंगी उपराष्ट्रपति

अमरीका ने अपने नए राष्ट्रपति के चुनाव के साथ-साथ नया उपराष्ट्रपति भी चुन लिया है। अमरीका की नई उपराष्ट्रपति कमला हैरिस होंगी। इस जीत के साथ कमला इतिहास रचते हुए पहली भारतीय मूल एवं पहली अश्वेत अमेरिकी उपराष्ट्रपति बन गई है। जो बिडेन ने उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के तौर पर सीनेटर कमला हैरिस का चुना था।

कैलिफोर्निया के ऑकलैण्ड में जन्मी 56 वर्षीय कमला हैरिस की मां श्यामला गोपालन मूल रूप से भारत के चेन्नई की रहने वाली है और पिता डॉनल्ड हैरिस जमैका मूल के हैं। श्यामला 1960 में यूसी बर्कले आ गई।

एक साल पहले कैलिफोर्निया की सीनेटर हैरिस ने उम्मीदवारों की भीड़ से अलग छाप छोड़ी थी और लगातार कई बेहतरीन भाषण भी दिए। यही नहीं राष्ट्रपति पद की रेस में उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी जो बिडेन की भी आलोचना की। परन्तु वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण राष्ट्रपति बनने के अपने सपने को निलम्बित करना पड़ा।

चुनाव जीतने के बाद एक ट्विट में उन्होंने लिखा कि 'मेरे और बिडेन के लिए यह चुनाव बेहद महत्वपूर्ण था, ये अमेरिका की आत्मा के बारे में और हमारे लड़ने की इच्छाशक्ति के बारे में था। हमें आगे बहुत काम करना है, चलिये शुरू करते है।'

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अमेरिकी उपराष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद कमला हैरिस को बधाई देते हुए ट्विट किया कि, आपकी सफलता सफल रही, चिट्टी के लिए ही नहीं, बल्कि सभी भारतीय-अमेरिकियों के लिए भी बहुत गर्व की बात है।' - तमिल में चिट्टी का मतलब चाची होती है।

।। श्री कृष्णा ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। ॐ हनुमन्ते नमः ।।

बीकानेर मावा भण्डार

BMB

घीदार मावा एवं मीठा मावा के विक्रेता

शादी पार्टी में मावा के आर्डर बुक किए जाते हैं।

4, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी स्कूल मार्ग, उदयपुर (राज.)

Mobile - 9468704600, 9782704600

हैड ऑफिस :- डी.एस. बीकानेर

मानसिक रूप से परिपक्व होने की जरूरत

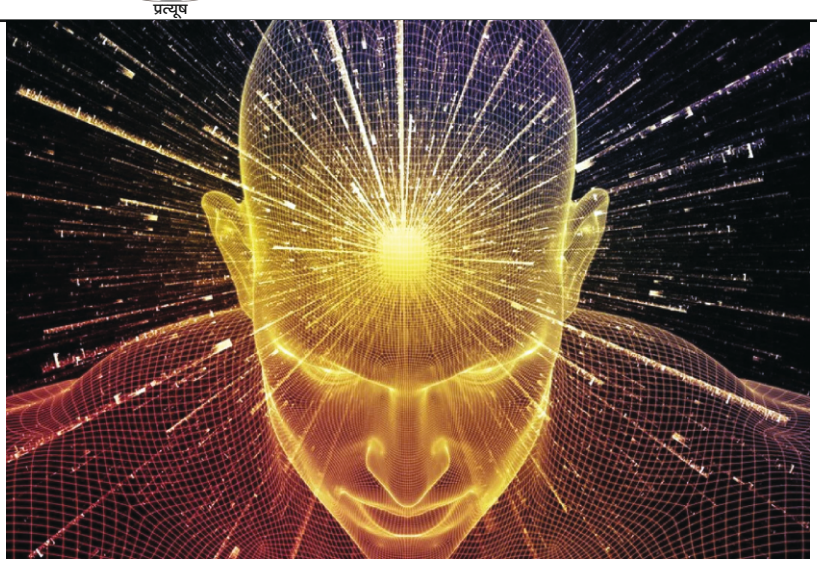

रश्मि सुमेधा

कल की स्मृतियों और आज की समस्याओं के साथ नहीं, बल्कि एकाकी और स्थिर मन से अपने गुरु के नाम ध्यान से ही संपूर्ण चित आनंदित और आत्मिक शांति प्राप्त करता है। बाह्य व आंतरिक बाध्यता के एकाकी होना यानी मन को हस्तक्षेप में मुक्त करके एकाकी हो, सीधे अपने गुरु ईश्वर की शरण में आना, यही ईश्वर, गुरु के प्रति प्रेम की अमिट गुणवत्ता है। यदि हमारा मन अपनी स्वनिर्मित समस्याओं का सामना नहीं करता तो हमारा मन साफ, स्पष्ट व गहरा नहीं है, इसलिए मन स्वच्छ, साफ रखना चाहिए। भविष्य में होने वाले प्रति लाभ के बारे में न सोचकर उत्कृष्ट कार्य करने चाहिए। यदि कर्म अच्छे हैं तो प्रतिफल निश्चित है। स्वयं व्यक्ति को अपना मूल्यांकन करना चाहिए कि वह कैसे कर्म करता है? क्या उसका आचार-व्यवहार नीतियुक्त है? या अशोभनीय है? हम जाने-अनजाने में कोई ऐसा कृत्य तो नहीं कर रहे हैं, जो किसी के मान-सम्मान को प्रभावित कर रहा है।

आज का मानव बैचेनी से भाग-दौड़ में व्यस्त है, पर यह कौनसी दौड़ है, जिसका अंत ही नहीं आता, संतुष्टि नहीं मिलती। क्यों यह मानव मन संवेदन शून्य थका हुआ, कुंठित और दुखी हो चला है?

सद्गुरु जगजीतसिंह जी भगवान श्रीकृष्ण को कर्मों का महान प्रेरणास्रोत मानते हैं। जिन्होंने अर्जुन को किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में कर्म के लिए प्रेरित किया। हम किसी को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या आर्थिक रूप से चोट तो नहीं पहुंचा रहे हैं। यदि हम ऐसे कृत्य करते हैं और नाम सिमरन भी करते हैं तो उसका कोई फल नहीं मिलेगा। मर्यादा, अनुशासन, पवित्रता, नीतियुक्त जीवन के साथ नाम सिमरन करने का फल होता है। यह अतिमहत्वपूर्ण और अतिश्रेष्ठ संदेश प्रत्येक मानव के लिए है। चाहे वह किसी भी जाति, कौम या समुदाय का हो। मर्यादा, अनुशासन, पवित्रता में रहना ही जीवन को सही लक्ष्य की ओर ले जाता है। आज का मानव बैचेनी से भाग-दौड़ में व्यस्त है, पर यह कौनसी दौड़ है, जिसका अंत ही नहीं आता, संतुष्टि नहीं मिलती। क्यों यह मानव मन संवेदन शून्य, थका हुआ, कुंठित और दुखी हो चला है? इस बारे में जाने-माने दार्शनिक जे.के. कृष्णमूर्ति कहते हैं कि -'यह दु:ख वस्तुत: गहरी विचारहीनता है, विचारशील और जागरूक लोग इस दु:ख से मुक्त हैं। मिथ्या चीजों एवं भौतिक सुखों के जाल से अपने आपको दूर रखकर नाम सिमरन करें। इससे आत्मज्ञान जागृत होगा, आत्मिक शांति मिलेगी। जिस तरह हम समय के साथ शारीरिक रूप से परिपक्व होते जाते हैं, वैसे ही हमें अपनी सोच को भी व्यापकता देनी चाहिए। हमें मानसिक रूप से और मन से भी पूर्ण परिपक्व होना चाहिए। जब हमारी सोच में फैलाव आता है, तभी समझ आता है। जीवन, सुख देने वाली भौतिक चीजों से नहीं अपितु अच्छे कर्मों से नाम सिमरन करने से ही पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति करता है। समस्त विकृतियां, समस्त द्वंद्व स्वयं दूर हो जाते हैं, जब हम आंतरिक रूप से अत्यंत सतर्क और जागरूक होते हैं।'

यदि गुरु का नाम सिमरन में ध्यान नहीं लगता तो लगातार ध्यान करते रहने से ध्यान केन्द्रित हो जाता है। जिस तरह ग्रामीण महिलाएं पनघट से गगरी भरकर लाती हैं और सखी समूह से बात करती हुई आती हैं, किंतु उनका अंत:चेतन मन एक के ऊपर एक रखी गगरी पर ही होता है। इसी तरह हमें कोई भी काम करते वक्त भी नाम सिमरन करते रहना चाहिए। एकाग्रचित होकर जबरदस्ती नाम ध्यान करने से अवश्य हमारा मन भटकेगा। नाम सिमरन से आत्मशोधन व दिव्यता की प्राप्ति होती है। ईश्वर का, अपने गुरु का सिर्फ नाम सिमरन से ही उद्धार नहीं होता। अच्छे कर्म, जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वेदों के महान ज्ञाता श्री स्वामी विदेह जी ने कहा है कि आत्मा को ज्ञान की प्राप्ति ज्ञानेन्द्रियों से और कार्यक्षमता की उपलब्धि कर्मेंद्रियों से होती है। इंद्रिया भौतिक हैं। अत: इंद्रिजन्य समस्त ज्ञान और कर्म भौतिक ही है। ज्ञान और कर्म की महिमा महान है। आध्यात्मिक क्षेत्र में ज्ञान और कर्म आत्मा को अनुभूति तक ही पहुंचा पाते हैं। आत्मा अनुभूति से परे प्रत्यक्ष साक्षात्कार को स्वयं प्रकाश स्वरूप देव के दिव्य प्रकाश से ही होता है। उनके दिव्य स्वरूप के दर्शन तो उसी की दिव्यदृष्टि से होते हैं। जिस तरह जीवन संचार के लिए भोजन व पानी की आवश्यकता होती है, ठीक उसी तरह जीवन को सुचारू रूप से जीने के लिए नाम सिमरन करना जरूरी है। मानव को अपनी समस्त इंद्रियों, इच्छाओं को वश में रखना चाहिए। जितना हम अपनी इच्छाओं को विस्तार देंगे, उतना ही हम दुखी रहेंगे। सभी कुछ तो जीवन में प्राप्त नहीं हो सकता। वैसे भी हमारी इच्छाएं असीमित होती हैं। जीवन से जितना ही व्यक्ति मांग करता है, उतना वह भय और दु:ख से भर जाता है।

रोटी में दो परतें कैसे बन जाती हैं?

अपनी मम्मी को कभी रोटी बनाते देखा है? अगर हां, तो बताओ कि जब वे रोटी बनाती हैं, तो उसमें दो परतें कैसे बन जाती हैं? पड़ गए न आश्चर्य में। दरअसल यह सब होता है गेहूं में मौजूद ग्लूटेन की वजह से। जब आटे को पानी की मदद से गूंदा जाता है, तब गेहूं में मौजूद प्रोटीन एक लचीली परत बना लेता है, जिसे ग्लूटेन कहते हैं। इसकी खासियत यह है कि वह अपने अन्दर कार्बन-डाई-ऑक्साइड सोख लेता है, इसी कारण आटा गूंदने के बाद फूला रहता है।

फिर जब हम उसकी रोटी बनाते हैं तो ग्लूटेन में बंद कार्बन-डाई-ऑक्साइड फैलती है, जिससे रोटी का ऊपरी हिस्सा फूल जाता है। जो भाग तवे के साथ चिपका होता है, उसकी पपड़ी-सी बन जाती है। इसी तरह रोटी के दूसरी तरफ भी पपड़ी बन जाती है। यानी इन दो पपड़ियों के बीच बंद कार्बन-डाइ-ऑक्साइड गैस और भाप दोनों रोटी की दो अलग-अलग परतें बना देते हैं। समझ गए न रोटी के फूलने का फॉर्मूला।

पान के पत्तों का कमाल!

पान खाने को अमूमन हम एक खराब लत के रूप में देखते हैं। पर पान कई तरह से हमारे लिए लाभदायक भी साबित होता है। पान सेहत के लिए कैसे है फायदेमंद, आइए जानें :

- पान डायबिटीज को नियंत्रण रखने में मदद करता है। ऐसा माना जाता है कि पान के पत्ते को चबाने से खून में शुगर का स्तर कम होता है और डायबिटीज ठीक होती है।
- वजन कम करने की कोशिश में भी पान का पत्ता आपके लिए उपयोगी साबित हो सकता है। पान खाने से शरीर में वसा की मात्रा कम होती है और शरीर का मेटाबॉलिज्म तेज होता है। मेटा बॉलिज्म के तेज होने से बढ़ते वजन से मुक्ति मिलती है।
- पान का पत्ता मुंह से जुड़ी बीमारियों को रोकने में भी कारगर साबित होता है। इसके लिए थोड़े-से पानी में 10-12 पान के पत्तों को कुछ मिनट तक उबाल लें। पान के पत्तों को इस पानी से निकाल लें। जब पानी ठंडा हो जाए तो उसमें शहद मिलाकर पी लें।
- घाव या छाले आदि हो जाने पर प्रभावित हिस्से के ऊपर पान का पत्ता रखें और पट्टी बांध दें। इससे घाव के ठीक होने की प्रक्रिया तेज हो जाएगी।
- पान के पत्तों को पीसकर उसका रस निकालें और अपने माथे पर लगाएं। सिर दर्द से राहत मिलेगी।

Kailash Agarwal
9414159130

Pankaj Agarwal
9414621211

Yuvraj Papers
Papers | Printing | Stationery

11-A, Indira Bazar, Nada Khada, Near Bapu Bazar, Udaipur - 313001
Phone :- + 91-294-2418586 email : info@yuvrajpapers.com

पर्यावरण के सन्दर्भ में 'सज्जन निवास बाग'

डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित

महाराणा उदयसिंह द्वारा 16वीं शताब्दी में उदयपुर नगर की स्थापना मध्यकालीन मेवाड़ की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिससे कालान्तर में उदयपुर विश्व के पर्यटन मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण नगर के रूप में मुखरित हुआ। नगर के प्रमुख आकर्षण हैं, यहाँ की झीलें तथा झीलों के प्राकृतिक सौन्दर्य का आधार है, इस क्षेत्र का पर्यावरण संतुलन। झीलों के चहुँओर विद्यमान वनस्पति, बाग-बाड़ियाँ, वन्यजीव अभ्यारण्य तथा निर्माण कार्य, नगर पर्यावरण इतिहास के साक्षी हैं। जिनका सूक्ष्म अध्ययन श्रेष्ठ पर्यावरण संतुलन काल को रेखांकित करता है। अशांति एवं अराजकता के काल में भी यहाँ के शासक झील निर्माण तथा उद्यान निर्माण के कल्याणकारी कार्यों में अपना सहयोग करते रहे। राज्य के अधिकारियों को पद के कार्य के अतिरिक्त, बाग-बाड़ियों की देख-रेख का दायित्व भी सौंपा जाता था। इस विधान से यह परिलक्षित होता है कि मेवाड़ के शासक पर्यावरण-संतुलन के प्रति अतिगंभीर थे। महाराणा लाखा के शासनकाल से महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) (1710-1734 ई.) का शासनकाल उदयपुर का श्रेष्ठ पर्यावरण संतुलन काल था। उस दौरान झीलों के चारों ओर तट पर कोई निर्माण कार्य नहीं था, तथा झीलों के किनारे सर्वत्र बाग-बाड़ियाँ, वनस्पति तथा अभ्यारण्य का अस्तित्व था। महाराणा जगतसिंह (1734-1751 ई.) से वर्तमान तक का काल झीलों के प्रदूषण एवं पर्यावरणीय असंतुलन का इतिहास है, जिस दौरान झीलों के चारों ओर अधिकाधिक निर्माण कार्य सम्पन्न हुए, जिसने झीलों में अपशिष्ट की मात्रा में वृद्धि कर गहराई को कम किया तथा जल को भी प्रदूषित किया। इसके साथ ही बाग-बाड़ियों के स्थान पर भवन निर्मित होने से वृक्ष कटने लगे और वृक्षों के अभाव में इस क्षेत्र का वर्षा स्तर गिरता गया। भूक्षरण होने से मिट्टी बहकर झीलों में जमा होने लगी जिससे झीलों की गहराई भी कम होती गई।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महाराणा सज्जनसिंह का उद्यान निर्माण परम्परा के क्षेत्र में प्रमुख योगदान रहा। नगर के केन्द्र बिन्दु में प्रजा के लिए सज्जन निवास बाग का निर्माण प्रकृति प्रेमियों के लिए महाराणा सज्जनसिंह की प्रमुख सौगात बनी। महाराणा को इस बाग की प्रेरणा जयपुर के रामनिवास बाग से प्राप्त हुई। महाराणा सज्जनसिंह ने 1881ई. में नौलखा बाग, गुलाबबाग तथा आस-पास स्थित आसीन्द, सलूम्बर तथा देलवाड़ा के सरदारों की बाड़ियों को सम्मिलित कर सज्जन निवास बाग का कार्य प्रारम्भ किया। नवलखा बाग राज दादी चौहान जी की जागीर में था, उसे भी अवाप्त किया गया। प्रारम्भ में इस बाग का विस्तार बड़ीपाल, समोरबाग तक था, जो 400 बीघा भूमि में प्रस्तावित था। किन्तु कालान्तर में 66.5 एकड़ भूमि में प्रस्तावित इस बाग की योजना एवं निर्माण के लिए महाराणा ने मद्रास से एक यूरोपियन-इंजीनियर टी.एच.स्टोरी को 300रू. प्रतिमाह वेतन पर बुलवाया, जिसने 1882 से 1920 ई. तक उदयपुर में रहकर इसका निर्माण, विकास एवं संवर्द्धन किया। 1881 ई. में महाराणा ने पुराने बाग के परकोटे को तुड़वाकर सरदारों की बाड़ियों को शमिल कर योजना के लिए 15625 रुपए 15 आने तथा 3 पाई के बजट की राशि स्वीकृत की।

पिछोला झील के अर्जुन खुर्रे से पानी की नहर निकालने के लिए मोरियों (नालियों) का निर्माण हुआ। समोरबाग से नाथूलाल की बाड़ी तक पानी की नहर बनाई गई। कमल के फूलों के लिए पृथक से कमल तलाई का निर्माण हुआ। सहारनपुर मद्रास, कश्मीर तथा विलायत से फलों एवं पुष्पों के बीज एवं पौधे मँगवाए गए और उन्हें बाग में बोया गया। फलों में आम, संतरे, अमरूद, अंगूर, जामुन, नींबू, बेर, रामफल, शहतूत, रायणा, बोरसली अनार, केले, खजूर, ईमली, कोटबड़ी, करणे, बेर, आड़ू, गोन्दे, बिजोरे, चकोतरे, करून्दे, मीठानीम आदि के वृक्ष उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त नीम, बबूल, पीपल, वट तथा अशोक के वृक्ष भी लगवाए गए जो आयुर्वेदिक औषधियों की दृष्टि से गुणकारी वृक्ष है। पुष्पों में मुख्य रूप से गुलाब, मोगरा, चमेली, रातरानी, गेंदा, हजारी, कनेर, गुड़हल, बोगनवेलिया आदि के पौधे लगवाकर बाग को इनकी महक से सुवासित किया। 1888-89, 1952-53 तथा 1982 में इस उद्यान में पुष्प तथा तरकारियों की प्रदर्शनियाँ लगी। 1892 में समस्त पौधों के नाम हिंदी और अंग्रेजी में लिखे

गए। अनेक स्थानों पर फव्वारों का निर्माण करवाया जाकर इसे 'नन्दन उपवन' की संज्ञा से विभूषित किया गया। रियासती काल में नौलखा-महल महाराणाओं की मनोरंजन-स्थली रहा। प्रतिवर्ष होली के दिन महाराणा राजमहल से होली खेलते हुए शाही सवारी के साथ गुलाबबाग स्थित इस महल में पहुँचते, जहाँ राज्य के प्रधान की ओर से गोठ (दावत) आयोजित होती, जिसमें महाराणा सम्मिलित होते, उत्सव और उल्लास के वातावरण में दिन व्यतीत करने के बाद पुन: राजमहल लौट आते।

इसी नौलखा महल में सन् 1882 में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महाराणा सज्जनसिंह का आतिथ्य स्वीकार कर निवास किया। स्वामीजी ने यहाँ निवास कर भारतीय स्वाधीनता की भावना को जागृत करने के उद्देश्य से प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की। वर्तमान में राज्य सरकार ने इस इमारत को आर्य-समाज को सौंप दिया है, जहाँ आर्य समाज ने एक आध्यात्मिक-संग्रहालय स्थापित किया है। इस संग्रहालय में स्वामी दयानन्द सरस्वती के उदयपुर तथा राजस्थान के अन्य नगरों में निवास के दौरान क्रियाकलापों की झाँकियों को चित्रों में जीवंत प्रस्तुत किया गया है। यह संग्रहालय सैलानियों के लिए खुला रहता है। इस इमारत के निकट कुछ ही दूरी पर विक्टोरिया हॉल स्थित है, जो वर्तमान में 'सरस्वती भवन पुस्तकालय' के नाम से प्रसिद्ध है। विक्टोरिया-हॉल का निर्माण महाराणा फतहसिंह ने क्वीन विक्टोरिया की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में 1887 ई. में करवाया था, जहाँ एक पुस्तकालय तथा संग्रहालय स्थापित किया गया। 1890 ई. में इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा इस संग्रहालय के क्यूरेटर नियुक्त हुए। इस पुस्तकालय का लोकार्पण, लॉर्ड लेन्सडाउन ने 1890 ई. में किया। इस संग्रहालय में मेवाड़ के ऐतिहासिक शिलालेख, पाण्डुलिपियाँ, पुस्तकें, सिक्के, ताम्रपत्र, मूर्तियाँ, पगड़ियाँ तथा पुरावस्तुएँ संग्रहित की गई। किन्तु वर्तमान में यह संग्रह राजमहल स्थित संग्रहालय में स्थानान्तरित हो चुका है। सरस्वती-भवन केवल पुस्तकालय के रूप में संचालित है। विक्टोरिया-हॉल के समक्ष स्थापित महात्मा गाँधी के मूर्ति के स्थान पर पूर्व में यहाँ क्वीन-विक्टोरिया की संगमरमर निर्मित सुन्दर कलात्मक प्रतिमा स्थापित थी। विक्टोरिया की रजत जयन्ती के उपलक्ष में महाराणा फतहसिंह ने 1887 ई. में प्रतिमा का शिलान्यास किया। 25000 रुपयों की लागत से निर्मित इस प्रतिमा का अनावरण 1890 ई. में प्रिन्स एल्बर्ट विक्टर ने किया। वर्तमान में यह प्रतिमा पुस्तकालय भवन में रखी हुई है। इस उद्यान में क्रिकेट, फुटबॉल और टेनिस के मैदान का निर्माण हुआ। इस उद्यान की दक्षिण दिशा के एक भाग में महाराणा फतहसिंह ने पशु एवं पक्षियों के पिंजरे निर्मित करवाकर वन्य जीवों का जंतुआलय स्थापित किया। इसी प्रकार उद्यान विभाग बगीचे में सुन्दर पुष्पों तथा फलों के पौधे मंगवाकर बोने का कार्य करता है। रियासतकाल में प्रतिवर्ष श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को यहाँ 'सुखिया सोमवार' का मेला आयोजित होता था, जिसमें नगर की प्रजा हर्षोल्लास के साथ सम्मिलित होती थी। यह सांस्कृतिक परम्परा एवं मेला आज भी प्रतिवर्ष आयोजित होता है। नगर परिषद् द्वारा संचालित बच्चों की रेलगाड़ी बाग के विकास की दिशा में एक उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय कदम है। प्रतिदिन शहर के निवासी प्रात: शुद्ध हवा के लिए यहाँ विचरण करते हैं। नगरवासियों को इस उद्यान को स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित रखने में सहयोग करना चाहिए तथा जिला प्रशासन द्वारा क्वीन विक्टोरिया की उपेक्षित प्रतिमा का रसायनिक-उपचार करवाया जाकर पुन: इस कलात्मक निधि को उद्यान में ही किसी उचित स्थान पर स्थापित किया जाना चाहिए। महाराणा भूपाल सिंह ने 1928 ई. में पक्की नालियाँ तथा 1932 ई. में सिंहद्वार का निर्माण करवाया।

देवीलाल डांगी
9414164094
9001229362

चन्दनवाड़ी फार्म

मांगलिक कार्यों हेतु 35000 वर्गफीट का हरा-भरा लॉन, मनमोहक फव्वारे, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग व्यवस्था, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, दिन भर पानी, बंगाली साज-सज्जा व ठहरने की उचित व्यवस्था।

प्रेम नगर, रूप सागर रोड, उदयपुर (राज.)

करन फार्म

मांगलिक कार्यों हेतु 32000 वर्गफीट का हरा-भरा लॉन, 80 व 60 फीट मेन रोड, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, खाना बनाने हेतु पानी एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध

महावीर नगर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

वार्षिक राशिफल 2021

मेष : वर्ष 2021 में दिन दशा का लाभांश एकपक्षीय रूप से श्रीकारक एवं सुखद योग नहीं है, मूलतया सामान्य उपलक्षण, भाग्योदय, कर्मोदय एवं राज्योदय पक्ष विकास गति से असंतोष, मानद जीवन में कमी तथा अपयश-अपवाद की अनुभूति रहे, शरीर सुख स्वास्थ्य का चलन-कलन सामान्य क्रम से ठीक तथा मानसिक विकार बना रहे, कार्य व्यवसाय द्वारा लाभ-आमद सामान्य, योजना श्रम साधना के अनुसार लाभांश में कमी तथा जमा राशि से असंतोष, परिवार में स्त्री, माता तथा सहयोगी वर्ग से विरोधाभास, पदान्नंतर प्रस्थान परिवर्तन बनेंगे, भूमि जायदाद में विवाद, सुयोग 40 प्रतिशत एवं कुयोग 60 प्रतिशत बना है।

वृषभ : यह वर्ष विगत वर्ष से सुखद प्रतीत होता है, जनजीवन में मनोत्साह तथा कर्मोदय विकास हेतु योग बनेंगे, अवरूद्ध कार्यों में नवीन गति एवं दिशा पथ का सूत्रपात बने, मांगलिक एवं सद्कार्यों में खर्च, शरीर सुख स्वास्थ्य दृष्टि से गतिक्रम ठीक हैं, बौद्धिक विकास एवं निज कला-कौशल के प्रति मनोत्साह चरितार्थ रहेगा, मुद्रा कोष वृद्धि तथा ऋण प्रभार में न्यूनता आएगी। परिवार सुख, मित्र-बान्धव, स्त्री के व्यवहार व वातावरण में सुधार, स्वतंत्र कार्यशील एवं शासकीय सेवारत अथवा राजनीति में गतिमान वर्ग हेतु नवीन दिशा का सूत्रपात, सुयोग 50 प्रतिशत एवं कुयोग 50 प्रति. प्रभावी रहे।

मिथुन : यह वर्ष दिनदशा एवं गोचर ग्रह से सुखद प्रतीत नहीं होता, सहज विषयक कार्यों में बाधा एवं भाग्य, राज्य-कर्म आदि पक्षों से असंतोष के कारण मानसिक तनाव, व्यर्थ के कार्यों एवं क्रियाकलाप में समय एवं धन खर्च होगा, आकस्मिक व्यय के योग बनेंगे, वाद-विवाद, यात्रा प्रवास, रोग-शोक में समय एवं खर्च बढ़ेगा, सुख-स्वास्थ्य न्यून, मस्तिष्क प्रभार, चिन्तन, चोट-मोच तथा गुप्त विकार प्रतिफलित होवे, कार्य व्यवसाय लाभ आमद की गति संतोषजनक नहीं, ऋण प्रभार में वृद्धि, पद या स्थान परिवर्तन की संभावनाएं, अनैतिक कार्य, अतिलोभ-प्रलोभ आदि से दूरी रखे। सुयोग 30 प्रतिशत एवं कुयोग 70 प्रतिशत संभावित।

कर्क : वर्ष 2021 सामान्य प्रतीत हो रहा है। नवीन कार्य रचना, अभिनव सम्पर्क कार्य वृद्धि हेतु प्रतिकूल, व्यर्थ के कार्य, प्रपंच, अनैतिक कार्य, नेतागिरी आदि से बचकर रहना हितकर, आत्मशक्ति के अनुसार कार्य शक्ति, माता पक्ष से न्यूनाधिक विरोध का सामना, आर्थिक लेनदेन समाधान में विबाधा। सुयोग 45 प्रति. एवं कुयोग 55 प्रति. शत।

सिंह : यह वर्ष आपके लिए सुखद प्रतीत होता है, विगत वर्ष की तुलना में अभिनव कार्य रचना, नव सम्पर्क का योग, एवं अवरोधित कार्यों का समाधान, निज वर्चस्व, प्रभाव गुण धर्म का उदयमान एवं विरोधी जनों का पलायन, राज्य, कर्म, भाग्य आदि पक्षों से अनुकूलता, सुयोग वृद्धि के अवसर, शरीर सुख स्वास्थ्य दैनिक जीवनचर्या ठीक रहेगी। नवनिर्माण रचनात्मक कार्य हेतु नवीन योजनाओं का सूत्रपात एवं मांगलिक कार्य समायोजन के अवसर बनेंगे। आपकी योग्यता के अनुसार यथोचित सफलता के अवसर। पारिवारिक सुख एवं शुभ सन्देश मिले, सुयोग 70 प्रति. एवं कुयोग 30 प्रति. संभव।

कन्या : वर्ष 2021 आपके लिए औसत फलदायी रहेगा, विशेष अभिलाषा या योजना विशेष अथवा प्रलोभन से बचें। लेन-देन सौदा सूत्र एवं आर्थिक व्यवहार में स्पष्टता का रूख रखे। शरीर सुख आरोग्य सामान्यतः ठीक रहेगा तथा मानसिक चिन्ता कार्य प्रभार-श्रम विशेष व ऋण प्रभार की स्थिति बन सकती है, सहयोगी वर्ग मित्र-बान्धव-अधिकारी वर्ग से विरोधाभास की स्थिति। आय-व्यय का संतुलन रहेगा, मित्र-बांधव, सहयोगी वर्ग, अधिकारीगण से समाधान, विशेष मनोनीत सफलता, उच्च अभिलाषा, नवीन योजना, सम्पर्क रचना से बचाव का ध्यान रखे। सुयोग 40 प्रति. एवं कुयोग 60 प्रति. फलदायी रहेगा।

तुला : सुयोग स्वल्प बनने से यह वर्ष फलदायी सिद्ध नहीं होगा, भाग्य-राज्य-शासन-कर्म पक्ष की दृष्टि से विगत वर्ष की अपेक्षा आनुपातिक पराभव एवं निराशाजनक रहेगा। अकल्पित समस्या का विकास, ऋण प्रभार, रकम अवरोध, मानसिक सुख शक्ति में कमी, अतः अनैतिक कार्य, प्रलोभन, उन्नत अभिलाषा, नव कार्य योजना विस्तार आदि से बचें, शरीर सुख साधना में कमी, वात जनित विकार, चोट-मोच, वाहन संघात से परेशानी। राज्यवर्ग, कर्म सम्पदा, पुण्य प्रताप विषयक न्यूनता। सुयोग 30 प्रति. एवं कुयोग 70 प्रति. प्रभावी है।

वृश्चिक : ग्रह गोचर से यह वर्ष शुभ एवं श्रीकार प्रतीत होता है, नवीन गति क्रय तथा मनोत्साह वृद्धि के अवसर, निज कला, कार्य शक्ति, गुण सम्पदा के विकास के साथ ही नवसम्पर्क कार्य योजना का प्रसार, धन परियोजना आदि में अभिवृद्धि, निजबल पराक्रम, कार्य क्षमता, मनोत्साह आदि गुण धर्म में नवीन गति तथा उत्तरोत्तर श्रीकार स्थिति का नियोग, शरीर सुख साधना में सुधार, परिवार एवं सहयोगी वर्ग से अनुकूलता, शत्रु पक्ष का पलायन, निज अधिकार वर्चस्व में सुगति, राजनैतिक-सामाजिक-व्यवसायिक दृष्टि से उत्तरोत्तर उन्नति, सुयोग 70 प्रतिशत एवं कुयोग 30 प्रतिशत।

धनु : यह वर्ष योगद प्रतीत नहीं होता, अधिक प्रलोभन एवं मृगतृष्णा से दूर रहें, निष्काम प्रतिफल रखते हुए क्रियाशील रहे, द्रव्य-सम्पदा हेतु मोहित नहीं रहते हुए आर्थिक सन्तुलन रखें। कार्य विबाधा तथा श्रम साधना अनुकूल लाभांश में न्यूनता, परिवार पक्ष में स्त्री, पिता तथा राज्य पक्ष से विवाद, लेन-देन एवं व्यवहार दृष्टि से सतर्कता रखे। सुयोग 30 प्रतिशत एवं कुयोग 70 प्रतिशत।

मकर : इस वर्ष सुयोग स्वल्प एवं विषय योग प्रभावकारी रहेंगे, नित्य की चर्या में सतर्कता हितकर रहेगा। उदारमनोवृत्ति पर नियंत्रण, लेन-देन, सौदे एवं आर्थिक व्यवहार में सावधानी आवश्यक है। कार्य व्यवसाय के पक्ष में लाभ आमदनी का ग्रतिक्रम सामान्य। यात्रा प्रवास, स्थान, पद परिवर्तन में संभव, परिवार। उद्योग व्यवसाय कार्य धंधा रोज रोजगार में अभिरूचि मनोवृत्ति गति मति न्यून तथा श्रम साधना अनुसार लाभ आमदनी का मार्ग विबाधा युक्त। रकम आवक में अवरोध, आर्थिक समाधान लेन-देन व्यवहार रचना में न्यूनता का प्रभाव। सुयोग 35 प्रतिशत एवं कुयोग 65 प्रति.।

कुम्भ : गत वर्ष की अपेक्षा पराभव एवं न्यूनता का अनुभव करेंगे। नित्यचर्या, कार्य, व्यवसाय में अवरोध की स्थिति मानसिक संताप देगी। आकस्मिक व्यय, लाभ आमद की अपेक्षा खर्चे का गतिक्रम रहेगा। पारस्परिक लेन-देन एवं बोलचाल में सन्तुलन रखें, भाग्य में अवरोध, शत्रु पक्ष की वृद्धि, मित्र बान्धव परिवार पक्ष में विरोधाभास, वाद-विवाद एवं व्यर्थ कार्यों में खर्च। व्यवसाय में अभिरूचि कम एवं यथोचित शक्ति समय साधना का अवसर नहीं मिलेगा। आय की अपेक्षा व्यय-खर्चे अधिक, सामाजिक व राजनीतिक स्वरूप से व्यवहार में कमी। सुयोग, 30 प्रतिशत कुयोग 70 प्रतिशत।

मीन : यह वर्ष श्रेयस्कर प्रतीत होता है, जनजीवन में अभिनव कार्यरचना, सुयोग तथा अवरोधित कार्य समाधान हेतु श्रीकार बना है। आपके राजनैतिक, व्यवसायिक तथा कला विकास पक्ष अथवा शासकीय सेवारत वर्ग हित अभिनव विकास संवृद्धि का कारक सूचक है, नूतन कार्य योजना, नवसम्पर्क, अस्तित्व वर्चस्व वृद्धि, शरीर सुख स्वास्थ्य लाभ दृष्टि से गतिक्रम ठीक है, मनोत्साह, संवृद्धि का सुयोग, कार्य व्यवसाय तथा लाभ आमद पक्ष से संतोष। कार्य व्यवसाय, उद्योग में नवीन योजना एवं कार्य विस्तार का अवसर। परिवार पक्ष, मित्र बान्धव एवं अधिकारी वर्ग से लाभ, सुयोग 70 प्रतिशत एवं कुयोग 30 प्रतिशत।

हमेशा नया सीखो

ओशो

जीवन का अर्थ है – रोज-रोज नए अनुभव। जिसने नए का अनुभव बंद कर दिया है, वह मर चुका है, उसकी मृत्यु कभी की हो चुकी है। उसका अस्तित्व बेकार है, वह मरने के बाद अब किसी तरह जी रहा है। उसे बूढ़े आदमी ने कहा, मैं सीखूंगा, जब तक जीता हूँ, और परमात्मा से एक ही प्रार्थना है कि जब मैं मरूं, तो मृत्यु के क्षण में भी सीखता हुआ मरूं, ताकि मृत्यु, मृत्यु जैसी न मालूम पड़े, वह भी जीवन्त प्रतीत हो। सीखने की प्रक्रिया है – जीवन। ज्ञान की उपलब्धि है – जीवन। इस देश का दुर्भाग्य है कि हमने सीखना तो हजारों साल से बंद कर दिया है। हम नया कुछ भी सीखने को उत्सुक और आतुर नहीं हैं। हमारे प्राणों की प्यास ठंडी पड़ गई है, हमारी चेतना की ज्योति ठंडी पड़ गई है, हमें एक भ्रम पैदा हो गया है कि हमने सब सीख लिया है, हमने सब पा लिया, हमने सब जान लिया। जानने को अनंत शेष है। आदमी का ज्ञान कितना ही ज्यादा हो जाए, उस विस्तार के सामने ना कुछ है, जो सदा जानने को शेष रह जाता है। ज्ञान थोड़ा-सा है, अज्ञान बहुत बड़ा है। उस अज्ञान को, जिसे तोड़ना है, उसे सीखते ही जाना होता है, सीखते ही जाना होगा। लेकिन हमारे यहा सीखने की प्रक्रिया और युवा होने की धारणा ही खो गई है। यहाँ हम बहुत जल्दी सख्त हो जाते हैं, कठोर हो जाते हैं, लोच खो देते हैं। बदलाव की क्षमता, रिसेप्टिविटी, ग्राहकता – सब

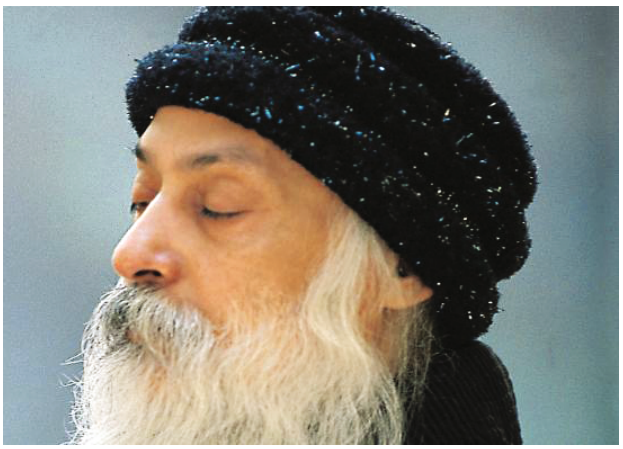

खो देते हैं। एक जवान आदमी से यह बात करो, तो वह इस तरह बात करता है, जैसे उसने अपनी सारी धारणाएं सुनिश्चित कर ली हैं। उसका सब ज्ञान ठहर गया है, उसकी आँखों में इन्क्वेरी नहीं मालूम होती है, खोज नहीं मालूम होती है। ऐसा लगता है, उसने पा लिया है, जान लिया है, सब ठीक-ठीक है। आगे अब कुछ करने को शेष ही नहीं रह गया है।

शिष्या से प्रकांड पंडित ने सीखा निराभमान रहना

आज से तीन सदी पूर्व उपाध्याय यशोविजय के नाम से एक विख्यात पंडित हुए हैं, जो अनेक विषयों के ज्ञाता और अत्यंत मेधावान थे। उनकी विद्वता इस बात से आंकी जा सकती है कि एक बार पंडितों द्वारा दिए गए किसी विषय पर वे घंटों संस्कृत में धाराप्रवाह बोलते रहे। धीरे-धीरे अपने पांडित्य की सफलता का नशा भी उन पर हावी होने लगा। व्याख्यान के समय सामने रखी जाने वाली स्थापना पर उनके कहे अनुसार शिष्य चार झंडियां लगाने लगे, जिसका आशय यह था कि चारों दिशाओं में उनका यश व्याप्त हो गया है। विद्वता और सफलता का यह प्रदर्शन अन्य शिष्यों को ठीक नहीं लगा, किन्तु कोई उन्हें टोकने का साहस नहीं कर पाया। एक दिन एक शिष्या ने बड़ी चतुराई से उनसे पूछा – 'गुरुदेव'! आपका पांडित्य धन्य है। मैं बड़ी भाग्यवान हूं, जो आप जैसे महापुरुष के दर्शन हुए और आपके सत्संग का लाभ मिला। महाराज! एक प्रश्न कई दिनों से मेरे मन में उठ रहा है, आज साहस कर पूछ रही हूं। क्या गौतम स्वामी व सुधर्मा स्वामी भी आप जैसे विद्वान थे?' उपाध्यायजी बोले – 'मैं तो उनके चरणों की धूल भी नहीं हूं।' तब शिष्या ने कहा – 'क्या वे भी अपनी स्थापना की चतुर्दिश ध्वजा लगाते थे?' उपाध्यायजी को तत्काल अपनी गलती का भान हुआ और उन्होंने वे ध्वजाएं तोड़कर फेंक दीं। अब उनका हृदय अहंकार से रहित हो निर्मल ज्ञान से भर गया। कथा का सार यह है कि ज्ञान का सात्विक आलोक तभी मुखर और सार्थक होता है, जब वह अभिमान से रहित हो। वस्तुत: अहंकाररहित ज्ञान ही सच्चा मार्गदर्शक होता है।

लगन-ईमानदारी में छिपे हैं महानता के बीज

यूनान के थ्रेस प्रांत में एक निर्धन बालक दिन भर परिश्रम करके जंगल में लकड़ी काटता। फिर गट्ठर बनाकर बाजार में बेचता था। एक दिन एक सम्भ्रांत व्यक्ति बाजार से जा रहा था। उसने देखा कि बालक का गट्ठर बहुत ही कलात्मक रूप से बंधा हुआ है। उसने उस लड़के से पूछा, 'क्या यह गट्ठर तुमने बांधा है?' लड़के ने जवाब दिया, 'जी हां, मैं दिन भर लकड़ी काटता हूं, स्वयं गट्ठर बांधता हूं और फिर रोज बाजार में बेचता हूं।' उस व्यक्ति ने लड़के से कहा, 'क्या तुम इसे खोल कर इसी प्रकार वापस बांध सकते हो?' 'जी हां, यह देखिए।' इतना कहकर उस लड़के ने गट्ठर खोला तथा सुन्दर तरीके से पुन: गट्ठर बांध दिया। उस व्यक्ति पर लड़के की एकाग्रचित्तता, लगन व कलात्मक प्रतिभा का बहुत प्रभाव पड़ा। उसने बालक से कहा, 'क्या तुम मेरे साथ चलोगे? मैं तुम्हें शिक्षा दिलाऊंगा और सारा व्यय वहन करूंगा।' बालक ने उस व्यक्ति को अपनी स्वीकृति दे दी और उसके साथ चला गया। थोड़े समय में ही उस बालक ने अपनी लगन तथा कुशाग्र बुद्धि से उच्च शिक्षा को आत्मसात कर लिया। बड़ा होने पर वही बालक महान दार्शनिक पाइथोगोरस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह भला आदमी जो बालक की आदतों, बुद्धि व लगन पर मोहित हो गया था, जिसने बालक के अंदर छिपे महानता के बीज को पल्लवित किया था, वह था विख्यात तत्वज्ञानी डेमोक्रीट्स। जो व्यक्ति अपने छोटे-छोटे कार्य भी लगन एवं ईमानदारी से करते हैं, उन्हीं में महानता के बीज छिपे रहते हैं।

श्री सीमेंट 'नमन' से करेगा शहीदों का सम्मान

निःशुल्क सीमेंट से बनेगा शहीद के परिजनों का आशियाना

ब्यावर। श्री सीमेंट कम्पनी द्वारा शहीदों के परिजनों के लिए आशियाना बनाने की 'नमन योजना' का आगाज किया गया। राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत 20 वर्षों में सशस्त्र सेना के शहीदों के परिवारों को अपना घर बनाने के लिए कंपनी द्वारा योजना के तहत मुफ्त सीमेंट उपलब्ध करवाई जाएगी। शहीदों को समर्पित 'नमन योजना' का शुभारंभ विजय दिवस की पूर्व संध्या पर भारतीय सेना के दक्षिणी-पश्चिमी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-सी लेफ्टीनेंट जनरल आलोक क्लेर ने किया। श्री सीमेंट द्वारा पोषित योजना के तहत एक जनवरी 1999 से 1 जनवरी 2019 की अवधि में सशस्त्र सेना में शहीद होने वाले सैनिक के परिवार तथा निकटतम

परिजन को चार हजार वर्गफीट तक के भूखंड में स्वयं का निवास बनाने के लिए श्री सीमेंट द्वारा मुफ्त सीमेंट उपलब्ध करवाई जाएगी। शहीदों के परिवार देश में श्री सीमेंट कंपनी के किसी भी कारखाने या इकाई में सम्पर्क कर सीमेंट प्राप्त करने के आवेदन कर सकते है। श्री सीमेंट के संयुक्त प्रबंध निदेशक प्रशांत बांगड़ ने कहा कि मातृभूमि की सेवा में बलिदान देने वाले सैनिकों के सम्मान में यह भूमिका निभाना हमारे लिए गौरव की बात है। उन्होंने योजना को स्वीकृति देने के लिए रक्षामंत्री राजनाथसिंह का भी आभार जताया। उक्त योजना भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय सैनिक बोर्ड, राज्य सैनिक बोर्डों एवं जिला सैनिक बोर्डों के सहयोग से संचालित की जाएगी। इस दौरान कम्पनी के अध्यक्ष वाणिज्यिक संजय मेहता, संयुक्त अध्यक्ष वाणिज्यिक अरविंद खीचा, उपाध्यक्ष के के जैन एवं कम्पनी के सचिव एस एस खंडेलवाल भी मौजूद थे।

सीपीएस को बेस्ट जोनल ट्रॉफी का खिताब

उदयपुर। न्यू भूपालपुरा स्थित सेंट्रल पब्लिक स्कूल की निदेशक अलका शर्मा को साइंस ओलम्पियाड फाउण्डेशन दिल्ली की ओर से वर्ष 2019-2020 के लिए राजस्थान जोन के बेस्ट जोनल ट्रॉफी के पुरस्कार और दस हजार रुपए नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी दूरदर्शिता, कुशल नेतृत्व व शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया।

महिला कैदी की बालिका का सूरज पूजन

उदयपुर। केन्द्रीय कारागृह की बच्ची को जन्म देने वाली महिला बंदी का सूरज पूजन रोटरी क्लब उदयपुर वसुधा की ओर से किया गया। सूरज पूजन कर मां-बेटी की जरूरत की सामग्री दी गई। नामकरण संस्कार कर बालिका का नाम लक्ष्मी रखा गया। मुख्य अतिथि सेवा प्राधिकरण की सचिव एडीजे रिद्धिमा शर्मा, क्लब परामर्श दात्री मधु सरीन थी। अध्यक्ष मीना मांडोत ने बताया कि महिला कैदियों के लिए तीन साल से निरंतर कार्य किए जा रहे है। महिला जेल इंचार्ज वीना मीणा, चार्टर अध्यक्ष शकुंतला पोरवाल की मौजूदगी रही।

डॉ. गायत्री को एकेडमिक एक्सीलेंस अवार्ड

उदयपुर। इंस्टीट्यूट ऑफ स्कालर्स, बैंगलूरु की ओर से एमपीयूएटी की कॉलेज ऑफ कम्युनिटी एंड एप्लाइड साइंसेस की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. गायत्री तिवारी को एकेडमिक एक्सीलेंस अवार्ड 2020 के लिए चयनित किया गया है। डॉ. गायत्री को यह अवार्ड शैक्षणिक क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए दिया गया है।

डॉ. पोसवाल शिशु अकादमी के अध्यक्ष

उदयपुर। इंडियन अकादमी ऑफ पीडियाट्रिक्स की ओर से राजस्थान की वर्ष 2020-21 की नई कार्यकारिणी गठित की गई। कार्यकारिणी में डॉ. लाखन पोसवाल को अध्यक्ष और डॉ. मनोज अग्रवाल को सचिव नियुक्त किया। जयपुर के वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक कासलीवाल को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

पांचवी बार दान किया प्लाज्मा

उदयपुर। शहर के समाजसेवी एवं व्यवसायी दीपेश हेमनानी ने चौथी बार प्लाज्मा डोनेट किया। सिंधी समाज के उमेश मनवानी ने बताया कि हेमनानी ने पहले भी चार बार प्लाज्मा डोनेट किया है। इससे दस लोगों को लाभ मिलेगा। हरीश राजानी ने बताया कि दीपेश के इस कार्य से सिंधी समाज का गौरव बढ़ा है।

शक्तिनगर व्यापार मंडल की कार्यकारिणी घोषित

उदयपुर। शक्तिनगर व्यापार मंडल द्वारा पिछले दिनों आयोजित एक बैठक में नई कार्यकारिणी ने शपथ ली। इस मौके पर व्यापारियों की समस्याओं पर चर्चा हुई। अध्यक्ष मुकेश माधवानी ने बताया कि हनुमंत कुमार तलेसरा, अनिल मेहता, चन्द्रसिंह कोठारी, अशोक माधवानी, प्रहलाद गखरेजा, कमलेश राजानी को संरक्षक मनोनीत किया। मुख्य कार्यकारिणी में अध्यक्ष मुकेश माधवानी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोवर्धन राठौड़, उपाध्यक्ष पुष्पेन्द्र शर्मा, नक्षत्र तलेसरा, भुवनेश्वर पालीवाल, राहुल राजानी, महासचिव जितेन्द्र कालरा, सहसचिव आशीष गखरेजा और संगठन मंत्री विक्रम माधवानी ने शपथ ली।

कशिश बनी संयोजिका

उदयपुर। बीइंग मानव एनजीओ ने सिंधी समाज के साथ मिलकर झूलेलाल नारी संघ बीइंग मानव का पिछले दिनों गठन किया। झूलेलाल युवा एवं नारी संघ संस्थापक गिरीश राजानी ने बताया कि कशिश नारवानी को बीइंग मानव की संयोजिका बनाया गया है। इस अवसर पर बीइंग मानव से मुकेश माधवानी, झूलेलाल नारी संघ परिवार से चांदनी लालवानी, आरती आहूजा, सुनीता पाहुजा, महिमा चुघ, वीना पाहुजा, रिया कालरा आदि मौजूद थीं।

सौरभ यूथ कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता नियुक्त

उदयपुर। भारतीय यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष एवं महासचिव ने राजस्थान प्रदेश यूथ कांग्रेस के प्रवक्ताओं की 11 सदस्यीय टीम को मंजूरी दी है, इसमें उदयपुर के सौरभ शर्मा भी शामिल हैं। यह जानकारी शहर जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान प्रवक्ता फिरोज अहमद शेख ने दी।

कैलाश चौधरी प्रदेशाध्यक्ष

उदयपुर। जायसवाल क्लब के मुख्य संरक्षक रवीन्द्र जायसवाल ने क्लब के प्रदेश अध्यक्ष पद पर कैलाश चौधरी को मनोनीत किया है। यह जानकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने दी।

भारती स्काउट गाईड जनसम्पर्क नियुक्त

उदयपुर। गिरिश भारती को हिन्दुस्तान स्काउट गाइड्स राजस्थान राज्य के उदयपुर जिला मुख्यालय आयुक्त(जनसम्पर्क) के पद पर नियुक्त किया गया है। संगठन के सहायक राज्य संगठन आयुक्त प्रदीप मेघवाल ने बताया कि भारती की नियुक्ति शिक्षा और समाज सेवा में उनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए की गई है।

विजय अध्यक्ष, सचिन महामंत्री

उदयपुर। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन दस नरसिंहपुरा संस्थान ने सत्र 2020-23 के लिए राष्ट्रीय युवा मोर्चा पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों की घोषणा की। परम संरक्षक कुंतीलाल जैन ने बताया कि राष्ट्रीय युवा मोर्चा प्रभारी डॉ. हर्षित जैन अहमदाबाद, अध्यक्ष विजय लुणदिया उदयपुर, कार्याध्यक्ष यतीन्द्र सुरावत ऋषभदेव, उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र मेहता नरोड़ा, विकास जैन उदयपुर, निलेश जैन दलोदा, धर्मेन्द्र जैन खेरोट, हंसमुख गनोड़िया उदयपुर, महामंत्री सचिन गनोड़िया ऋषभदेव को नियुक्त किया गया।

अर्थ डायग्नोस्टिक्स सेंटर पर सिटी स्केन में बेस्ट क्वालिटी पिक्चर ट्यूब

उदयपुर। जैसे-जैसे सर्दी बढ़ रही है, निमोनिया का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। निमोनिया के लक्षण आम फ्लू से मिलते-जुलते ही होते हैं, परंतु यह आम फ्लू से कहीं ज्यादा खतरनाक है। निमोनिया से निपटने का सही तरीका है इसका सही समय पर डायग्नोसिस करना। वर्तमान में आरसीटी निमोनिया की पहचान करने की सबसे सटीक जांच है, जिससे फेफड़ों में निमोनिया के संक्रमण के स्तर का पता चलता है। इससे तुरंत सही इलाज शुरू किया जा सकता है। सिटी स्केन में रिपोर्ट की पिक्चर क्वालिटी इसके मुख्य भाग - पिक्चर ट्यूब पर निर्भर करती है। इसलिए अच्छी पिक्चर ट्यूब वाली सिटी स्केन से अच्छी इमेज क्वालिटी की रिपोर्ट मिलती है, जिससे की डॉक्टर्स शरीर में निमोनिया से होने वाले बदलावों को बारीकी से देख सकते हैं। अर्थ डायग्नोस्टिक्स ने हाल ही में सिटी स्केन मशीन में बेस्ट क्वालिटी पिक्चर ट्यूब लगवाई हैं, जिससे मरीज को कम रेडिएशन मे हाई इमेज क्वालिटी की रिपोर्ट मिलती है। यह एडवांस सुविधा अर्थ डायग्नोस्टिक पर सरकार द्वारा निर्धारित दर मात्र 1700 रुपए में उपलब्ध है।

मेवाड़ के पहले इंडी स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर। प्रसिद्ध एफएमसीजी कम्पनी इंडी फूड्स ने मेवाड़ संभाग में अपने पहले इंडी स्टोर का शुभारंभ किया। शहर के न्यू नवरतन कॉम्प्लेक्स क्षेत्र में उदयपुर फ्रेंचाइजी हरेन इंटरप्राइजेज के निदेशक नितिन चौरसिया व ऋतु खत्री ने बताया कि कोरोना काल ने सभी को सेहत के प्रति जागरूक किया है। इसी को ध्यान में रखकर इंडी स्टोर खोला गया है। स्टोर पर ऑर्गेनिक्स, नेचुरल फूड, रेडी टू इट, फ्रेश फूड केटेगरी के करीब 310 खाद्य पदार्थ की श्रृंखला है। निदेशक कमल राठी, मिताली वर्डिया, अभिनव वर्डिया ने बताया कि स्टोर में सर्टिफाइड ऑर्गेनिक खाद्य पदार्थ के प्रोडक्ट्स उपलब्ध है।

लकड़ी के चम्मच पर 4 दिन में 265 पेंटिंग, वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया

उदयपुर। वागड़ की बेटी ग्रीष्मा पुत्री जयंन्द्र कुमार मेहता ने 4 दिन में लकड़ी की 265 चम्मचों पर पेंटिंग बनाकर राजस्थान की संस्कृति को बढ़ावा देने का काम किया है। ग्रीष्मा ने इतने कम समय में 9 सेंटीमीटर की लकड़ी की चम्मचों पर राजस्थानी परम्परा, कला, लोकगीत, संगीत, ऐतिहासिक स्थान, त्योहार, संस्कृति आदि की सबसे ज्यादा पेंटिंग बनाकर 6 दिसम्बर को अनूठा विश्व रिकॉर्ड बनाया। यहां आयोजित कार्यक्रम में वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडिया के अध्यक्ष पवन सोलंकी, निर्णायक मंडल सदस्य विनय भाणावत के हाथों ग्रीष्मा को प्रमाण पत्र, मोमेंटो और मैडल देकर सम्मानित किया गया।

स्थानीय समस्याओं पर शोध से होगा देश का विकास : सारंगदेवोत

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) के संघटक प्रबंध अध्ययन संस्थान के नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कर्नल एस.एस. सारंगदेवोत ने विद्यार्थियों को आह्वान किया कि वे ऐसे नवीनतम शोध पर अध्ययन करें, जिससे समाज और राष्ट्र की उन्नति में मदद मिले। उन्होंने कहा कि अच्छा प्रबंधक बनने के लिए उद्योग एवं बाजार की समस्याओं को समझकर उनका समाधान कर उसकी क्षमता को विकसित करें। मुख्य वक्ता प्रो. करुणेश सक्सेना ने इमोशनल इंटेलजेंस पर सेल्फ रेगुलेशन, मोटिवेशन पर विस्तार से चर्चा की। निदेशक प्रो. अनिता शुक्ला ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. नीरू राठौड़ ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. उषा चौहान ने, जबकि डॉ. हीना खान ने आभार व्यक्त किया।

दिशांत, निखिल और पुनीत बने कोच

उदयपुर। आरसीए ने युवाओं को मौका देते हुए सीनियर टीमों के लिए तीन नये कोच बनाए हैं। पूर्व रणजी क्रिकेटर दिशांत याग्निक, निखिल डोरू और पुनीत यादव को नया कोच नियुक्त किया गया है। दिशांत पांडिचेरी रणजी टीम से जुड़े रहे हैं, वहीं राजस्थान रॉयल्स के भी फील्डिंग कोच हैं। राजस्थान और रेलवे की ओर से रणजी ट्रॉफी खेले निखिल डोरू अभी रेलवे टीम के कोच हैं, जबकि पुनीत यादव पिछले क्रिकेट सत्र में अंडर-23 टीम के कोच रहे हैं।

महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट के वार्षिक कैलेण्डर का विमोचन

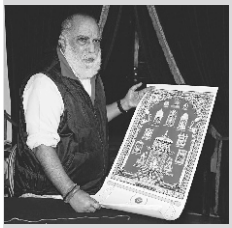

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशंस ट्रस्ट के वार्षिक कैलेण्डर 'विघ्नहर्ता विनायकजी महाराज राजमहल उदयपुर मेवाड़ बिराजित' का विमोचन महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी अरविन्द सिंह मेवाड़ ने किया। ट्रस्ट के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भूपेन्द्र सिंह आउवा ने बताया कि 2021 के कैलेण्डर में गणेश ड्योढ़ी बिराजित विनायकजी महाराज, एकलिंगजी, पालकी खाना, राय आंगन, खासा रसोड़ा, बड़ी पोल, अमर महल, जनाना महल, करण महल के चित्रों के साथ ऐतिहासिक जानकारी भी दी गई है।

एम स्क्वायर योगा क्लासेज का शुभारम्भ

उदयपुर। एम स्कवायर योगा क्लासेज का शुभारम्भ पिछले दिनों सेक्टर 11 स्थित आरनोल्ड फिटनेस क्लब जिम पर हुआ। अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डॉ अरविन्दर सिंह ने इसका उद्घाटन किया। आरनोल्ड के घनश्याम शर्मा ने बताया कि पहला सुख निरोगी काया और इसके लिए सबसे जरूरी है योग से जुड़ना। आज की भागदौड़ भरी जिदंगी में लोग योग व व्यायाम से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में लोगों को योग से जोड़ने के लिए यह प्रयास किया गया है। एम स्क्वायर के मुकेश माधवानी ने बताया कि सुबह 7 से 11 और शाम को 4 से 7 बजे तक योग करवाया जाएगा। आरनोल्ड के हितेश जोशी ने बताया कि योग गुरू मयंक गुप्ता योग सिखाएंगे। योग गुरू मयंक गुप्ता के अनुसार योग से मांसपेशियों का अच्छा व्यायाम होता है। योग से तनाव दूर होता है और अच्छी नींद आती है, भूख अच्छी लगती है, इतना ही नहीं पाचन भी सही रहता है। योगाभ्यास से आप रोगों से भी मुक्ति पा सकते हैं। योग से रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है और शरीर स्वस्थ और निरोगी बनाने में मददगार है। इस अवसर पर विनोद लौहार, मंजीत सिंह, सिमरन, कमल, करण, सुनील, शशिकांत गुप्ता आदि मौजूद थे।

'फूड हेरिटेज ऑफ राजस्थान' पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह राठौड़ द्वारा 'फूड हेरिटेज ऑफ राजस्थान' पुस्तक का विमोचन पिछले दिनों कुलपति निवास पर किया गया। पुस्तक के सम्पादक सुखाड़िया विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. पीयूष भादविया हैं। भादविया ने बताया कि पुस्तक पूर्व में हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत 37 शोधपत्रों का संकलन है एवं राजस्थान तथा मेवाड़ की ऐतिहासिक, पारम्परिक एवं लुप्त भोज्य परम्परा तथा संरक्षण के बारे में अनोखी, विस्तृत व दुर्लभ जानकारी उपलब्ध करवाती है। समारोह में इंटेक उदयपुर के संयोजक प्रो. बी. पी. भटनागर, सह-संयोजक गौरव सिंघवी, विभागाध्यक्ष प्रो. दिग्विजय भटनागर, विभाग सदस्य प्रो. प्रतिभा, डॉ. कैलाश गुर्जर, इंटेक सदस्य एस. के. वर्मा, प्रो. महेश शर्मा, प्रो. पुष्पेन्द्र सिंह राणावत उपस्थित थे।

राज सुराना जीतो उदयपुर चैप्टर के नए अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन(जीतो) के उदयपुर चैप्टर के नए अध्यक्ष राज सुराना होंगे। 13 दिसम्बर को हुए जीतो के द्विवार्षिक चुनाव में वे 52 मतों से विजयी

घोषित किए गए। मुख्य चुनाव अधिकारी वीरेन्द्र सिरोया ने बताया कि 438 सदस्यों में से 422 ने मतदान किया, जिनमें से 237 वोट राज सुराना को मिले। इस मौके पर आलोक पगारिया, अर्जुन खोखावत, कमल नाहटा, मानिक नाहर, अशोक दोशी, अभिषेक पोखरना, रंजीत पगारिया, अजित छाजेड़, राजेन्द्र जैन, तुषार मेहता, क्षितिज कुम्भट आदि ने भी सुराना के विजय होने पर अभिनंदन किया। उद्योगपति व समाजसेवी राजकुमार सुराना ने समाज के विद्यार्थियों के लिए उदयपुर में उच्च स्तरीय छात्रावास भवन, छात्रवृत्ति जेएटीएफ सीड लोंस की व्यवस्था को अपनी प्राथमिकता बताया ताकि उदयपुर में बढ़ रहे शैक्षिक वातावरण का सुदूर रहने वाले समाज के छात्र लाभ उठाना चाहें तो उन्हें सुविधा उपलब्ध हो। साथ ही उन्होंने जेएटीएफ के माध्यम से बैंकिंग सर्विसेज व सीए की कोचिंग के लिए राष्ट्रीय स्तर के सेंटर के लिए भी अपनी प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि समाज के हर व्यक्ति के उत्थान के लिए जो भी अच्छा विचार सामने आता है, उसका स्वागत किया जाएगा।

डॉ. भानावत को कला समय लोकशिखर सम्मान

उदयपुर। लोकसंस्कृति और कलाओं के बहुआयामी संरक्षणात्मक कार्यों के लिए संस्कृति मर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को 'कला समय लोकशिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भोपाल की कला समय संस्कृति शिक्षा और समाज सेवा समिति की ओर से उदयपुर में स्थानीय संस्था प्रतिनिधि इतिहासकार डॉ. देव कोठारी तथा डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू द्वारा प्रदान किया। डॉ. कोठारी ने डॉ. भानावत को शॉल ओढ़ाकर, स्मृति चिन्ह भेंट किया जबकि डॉ. जुगनू ने श्रीफल प्रदान कर प्रशस्ति वाचन किया।

पूर्व सीएस गुप्ता नए मुख्य सूचना आयुक्त

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने पिछले दिनों एक आदेश जारी कर पूर्व मुख्य सचिव एवं मुख्यमंत्री के सलाहकार देवेन्द्र भूषण गुप्ता को राज्य का नया मुख्य सूचना आयुक्त नियुक्त किया है। इसके अलावा वरिष्ठ पत्रकार नारायण बारेठ एवं राजस्थान पर्यटन विकास निगम के पूर्व अध्यक्ष रणदीप धनखड़ की पुत्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता शीतल धनखड़ को सूचना आयुक्त बनाया गया है।

दारूवाला की पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। प्रसिद्ध भविष्यवक्ता बेजान दारूवाला के पुत्र नस्तूर बेजान दारूवाला की भविष्यवाणी पुस्तक 'होरोस्कोप-2021' का विमोचन पिछले दिनों उदयपुर के सिटी पैलेस में लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने किया। मेवाड़ ने कहा कि पुस्तक में दारूवाला की भावना झलकती है। इस पुस्तक में दारूवाला ने लिखा है कि नरेन्द्र मोदी एक बार फिर से देश की सत्ता में होंगे। देश आगामी 5 वर्षों में सम्पन्न राष्ट्र की श्रेणी में आ जाएगा। भारत और अमेरिका के बीच अंतराष्ट्रीय सम्बन्ध मजबूत होंगे। लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ विश्व पटल पर पर्यटन के क्षेत्र में उदयपुर का नाम रोशन करेंगे।

डॉ. कौशिक प्रदेशाध्यक्ष

उदयपुर। आरएनटी मेडिकल कॉलेज व अमेरिकन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के पूर्व प्राचार्य एवं वरिष्ठ इंटरवेशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एस. के. कौशिक को प्रदेश की सभी कार्डियोलॉजिस्ट ने मिलकर निर्विरोध अध्यक्ष चुना है। वर्तमान में डॉ. कौशिक जीबीएच अमेरिकन में कार्यरत है। एमबी हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मुकेश शर्मा को कार्यकारी समिति सदस्य चुना है।

चुग पुनः अध्यक्ष व राजानी महासचिव

उदयपुर। पूज्य जेकबाबाद सिन्धी पंचायत के चुनाव पिछले दिनों शक्तिनगर स्थित झूलेलाल भवन में सम्पन्न हुए। राजस्थान सिन्धी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी ने प्रताप राय चुग के अब तक के कार्यों को देखते हुए पुनः उनके नाम का प्रस्ताव दिया। जिसका सभी द्वारा समर्थन किये करने पर सभा के अध्यक्ष मुरली राजानी ने आगामी तीन वर्ष के लिए प्रतापराय चुग को अध्यक्ष और वाशुदेव राजानी को महासचिव घोषित किया।

शोक समाचार

राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी का निधन

उदयपुर। राजसमंद विधायक एवं पूर्व केबिनेट मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी का 30 नवम्बर को निधन हो गया। वे मेवाड़ की संघर्षशील एवं भाजपा की कद्दावर नेता थी। कोरोना पॉजिटिव होने के बाद से वे गुरुग्राम स्थित मेदांता हॉस्पिटल में भर्ती थी।

अपने राजनैतिक कॅरियर में किरण ने पार्टी एवं सरकार में विभिन्न पदों पर रहते हुए अपनी जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन किया। उन्होंने ब्रॉडगेज, एयरपोर्ट विस्तार, किसान और आदिवासी कल्याण सहित संसद में क्षेत्र की अनेक समस्याओं को समय-समय पर उठाया। किरण माहेश्वरी 1987-90 तक हिन्दू संगठन दुर्गा वाहिनी की प्रमुख रही। वे 1992-95 राजस्थान के सोशल वेलफेयर बोर्ड की मेम्बर बनीं।

1990-92 तक महिला मोर्चा की जिला महामंत्री रही। बाद में 1993-94 तक उनको महिला मोर्चा देहात जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। 1994 में उदयपुर नगर परिषद पार्षद का चुनाव जीत कर उदयपुर की सभापति बनी। वर्ष 2002 से 2003 तक वे भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य रही। 2004 में ही उनको भाजपा महासचिव और 2007 में महिला मोर्चा राष्ट्रीय अध्यक्ष की बड़ी जिम्मेदारी मिली। 14वीं लोकसभा में वे उदयपुर से सांसद भी रहीं। साथ ही 15वें लोकसभा चुनाव में वे अजमेर से कांग्रेस प्रत्याशी सचिन पायलट के खिलाफ चुनाव लड़ी। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, सचिन पायलट सहित देश-प्रदेश के नेताओं एवं विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों की ओर से उन्हें श्रृद्धांजलि अर्पित की गई। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी ने भी उदयपुर स्थित उनके निवास पर पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित की।

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के पूर्व प्रबंधक (राजभाषा) तथा जिला मंच

उपभोक्ता संरक्षण व स्थायी लोक अदालत के पूर्व सदस्य डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी का गत 6 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती मोहनी देवी, पुत्र रवीन्द्र, डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी (पशुपालन विभाग), डॉ. मनोज सहित पौत्र-पौत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

राजसमंद। राजसमंद के श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री कन्हैयालाल जी कच्छारा एवं श्री सोहनलाल जी कच्छारा का आकस्मिक स्वर्गवास 3 दिसम्बर को हो गया। वे अपने पीछे भाई हस्तीमलजी, पुत्र पारसमल, सुरेश, ललित, रमेश, सुनील, देवेन्द्र, विनोद तथा पुत्रियाँ पिस्तादेवी, प्रकाश देवी, विमला, मीना, चंचल देवी, मंजू देवी, मधु, अरुणा

उदयपुर। शहर के प्रमुख चार्टर्ड एकाउंटेंट श्री बसंतीलाल दोशी का 26 नवम्बर एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीलादेवी दोशी का 27 नवम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्री मधु एवं पुत्र अभय, लोकेश, अरुण एवं सीए सुनील दोशी सहित पौत्री-पौत्रियों एवं दोहितों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। कांग्रेस नेता कैलाशचन्द्र सालवी की धर्मपत्नी श्रीमती भारती

सालवी का निधन 3 दिसम्बर को हो गया। वे अपने पीछे पुत्री तनीषा एवं पुत्र मनन सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। भारती के निधन पर उदयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के पंचवटी स्थित कांग्रेस कार्यालय पर कांग्रेस पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

उदयपुर। उद्यमी एवं समाजसेवी हस्तीमल गांग की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष देवी गांग का 7 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र अशोक एवं संजय तथा पुत्री सुधा सिंघवी सहित पौत्र-पौत्री एवं प्रपौत्र का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। भाजपा नेता प्रमोद सामर की माताजी श्रीमती कंकुबाई सामर (केसरदेवी) पत्नी कुंदनलाल जी का निधन 25 नवम्बर को हो गया। वे परिवार में पुत्र डॉ. सुरेन्द्र, डॉ. राजेन्द्र, डॉ. अरुण, प्रमोद, दिलीप का परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। राजस्थान हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के डॉ. सुनील गोयल के पिता श्री प्यारेलाल जी गोयल का निधन 2 दिसम्बर को गया। वे अपने परिवार में पत्नी सावित्री देवी, पुत्र नरेन्द्र, सुनील, राकेश सहित पौत्र-पौत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

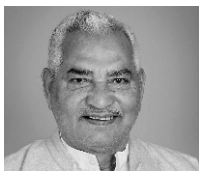

उदयपुर। शहर के प्रसिद्ध व्यवसायी एवं समाजसेवी श्री केशवदास जी वीरवानी का 13 दिसम्बर को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र वासुदेव, मुकेश, विनोद, रवि, दीपक का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। उद्योगपति श्री धर्मनारायण जी शर्मा का 17 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश शर्मा, पुत्र कृष्ण गोपाल एवं पुत्री नीलम सहित पौत्र-प्रपौत्र का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

डी.पी. आभूषण लिमिटेड के साथ
हर दिन करें एक शुभ शुरुआत

DP
D.P. Jewellers
A BOND OF TRUST SINCE 1940
A VENTURE OF D.P. ABHUSHAN LIMITED

50000 से भी अधिक डिज़ाइनर, वेडिंग, ट्रेडिशनल, एंटीक,
स्वर्ण, नेचुरल डायमंड और खूबसूरत पोल्की ज्वेलरी

✦ उदयपुर : 17 न्याय मार्ग, कोर्ट चौराहा (0294-2418712/13
✦ भीलवाड़ा : 56 नगर परिषद, राजेन्द्र मार्ग (01482-237999

रतलाम	इन्दौर	भोपाल	उज्जैन
(07412-408900	0731-4099996	0755-2606500	0734-2530786

For any bulk order or inquiry, mail your requirements to :
corporate@dpjewellers.com

BDGH since 1980 Together we make a difference

बिलासी देवी
गट्टानी हॉस्पीटल

40 Years of Quality care
Gattani Hospital

शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.) मो. 9269333699, 9667217458, 9214460061

Web site - www.pileshospitaludaipur.com, E-mail: gattanihospital@gmail.com

पाइल्स (क्रायो द्वारा) फिशर,फिस्टूला चिकित्सा का एक मात्र विश्वसनीय केन्द्र

पाइल्स
(मोडिफाइड क्रायो द्वारा)
एक दिन में छुट्टी
20,000 सफल ऑपरेशन

आज ही जानें
आपकी कब्ज़ की
गंभीरता को–
GKC SCORE
तुरंत लॉगऑन करें–
www.pileshospitaludaipur.com
Scan to download our App

बच्चेदानी ऑपरेशन
(बिना टाँके/दूरबीन द्वारा)
रियायती दरों पर
सामान्य प्रसव एवं सिजेरियन

डॉ. मुकेश देवपुरा
एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच.
मो. 94141-69339

निःसंतानता एवं स्त्री रोग चिकित्सा
शिशु चिकित्सा एवं टीकाकरण केन्द्र
Cashless Facility Available For Insured Patients

डॉ. कल्पना देवपुरा
एम.बी.बी.एस., एम एस.
मो. 94141-62750

सभी प्रकार के दूरबीन ऑपरेशन (हर्निया, पथरी)

WITH BEST COMPLIMENTS

BANSWARA

Yarn

Fabric

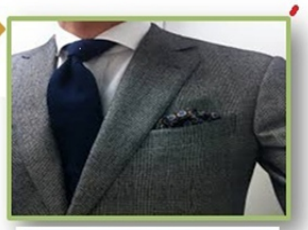

Garments

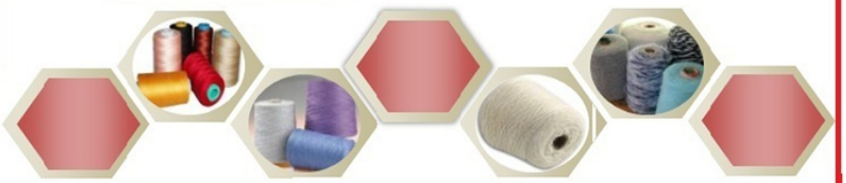

A Global Player in the Business of Fashion offering integraged Textile Solution to leading Brands World-wide & An Ideal Garment Solution Provider to Domestic & Global Readymade Brands

BANSWARA SYNTEX LTD

Regd. Office & Mills
Industrial Area, Dahod Road,
BANSWARA-327 001 (RAJ)
Ph.+91-2962-27676,79-81,257195-97
Fax.+91-2962-240692
Email:info@banswarasyntex.com

Mumbai Office
Gopal Bhavan (5th Floor)
199, Princess Street
MUMBAI -4000 02
Phoe:+91-22-66336571-76
Email:info@banswarasyntex.cim

Visit us at :www.banswarasyntex.com

Garment Unit:
Banswara Garments
98/3, Village Kadaiya
Nani Daman (U.T.)
Phone::+91-260-2221345, 2221505
Email: info@banswarasyntex.com

Surat Unit:
Plot No.5-6, G.I.D.C. Apparel Park
SEZ Sachin
SURAT-394230 (GUJARAT)
Phone:+91-261-2390363
Email:info@banswarasyntex.com